सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की

हमेशा ध्यान में रखिये की आपका सफल होने का संकल्प किसी भी और संकल्प से महत्वपूर्ण है।
-अब्राहम लिंकन

मूल्य ₹ 3/-

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 214 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 11 सितम्बर, 2026

दलीप ट्राफी: ईस्ट जोन की खिताबी जीत... 7 | बंगाल में एक बयान से मचा सियासी... 3 | यूपी की सारी लोस सीटें जीतने... 2

अरुण पुरी जी, क्यों लल्लनटॉप की करा रहे हैं फजीहत ?

पेड़ की कहानी लिखकर जड़ का नाम भूल गया इंडिया टुडे ग्रुप का लल्लनटॉप

» ऐसे पत्रकारों के भरोसे चल रहा हिंदी का बड़ा डिजिटल मंच जिन्हें क्रेडिट लिखना भी शायद भारी पड़ रहा है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बात निकलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी। जी हां कुर्तकों के सहारे शाहीन प्रकरण में बजाए गलती को स्वीकार करने के लल्लनटॉप द्वारा खुद को जस्टिफाई करने की कोशिशों ने उसे एक बार फिर ट्रोलर्स के निशाने पर ला खड़ा कर दिया है। सोशल मीडिया पर बहस तेज है और लोग सवाल पूछ रहे हैं कि जब किसी मीडिया संस्थान के पत्रकार के साथ ज्यादती होती है और उसी घटना पर दूसरा संस्थान रिपोर्टिंग करता है तो क्या उस पत्रकार की संस्थागत पहचान बताना पत्रकारिता की सामान्य परंपरा का हिस्सा नहीं है?

अरूण पुरी जी आखिर ऐसी कौन सी मजबूरी थी जिसमें लल्लनटॉप द्वारा 4PM का नाम नहीं लिया गया। दिल्ली में 4PM की पत्रकार शाहीन और नफीसा के साथ हुई घटना ने मीडिया जगत में सवाल खड़े किए। मामला सामने आया तो सभी मीडिया संस्थानों ने इसे उठाया। शाहीन और नफीसा की बात सुनी गई घटना पर बहस हुई पुलिस की भूमिका पर सवाल उठे। लल्लनटॉप ने भी इंटरव्यू किया यानी कहानी अच्छी लगी चेहरा अच्छा लगा मामला अच्छा लगा दर्शक भी मिले व्यूज भी मिले बस एक चीज शायद अच्छी नहीं लगी 4PM का नाम।

संबंधित खबर पेज 8 पर

रिपोर्टिंग किसकी और मलाई किसकी ?

लल्लनटॉप से कोई यह नहीं कह रहा कि शाहीन और नफीसा की कहानी मत दिखाइए बिल्कुल दिखाइए पूरी खबर दिखाइए इंटरव्यू कीजिए उनकी आवाज को देश के कोने-कोने तक पहुंचाइए लेकिन जब आप ऐसा कर रहे हो तो फिर यह दर्शकों को यह भी बताइए कि शाहीन/नफीसा किस संस्थान के पत्रकार हैं। क्योंकि पत्रकार की पहचान मिटाकर उसकी कहानी को चमका देना पत्रकारिता का मूल स्वभाव नहीं हो सकता और अगर 4PM का नाम लेना ब्रांड प्रमोशन है तो फिर यह सवाल भी लाजिमी है कि दूसरे पत्रकार के नाम से उसकी खबर की पहचान बचाए रखना किस श्रेणी में आएगा?

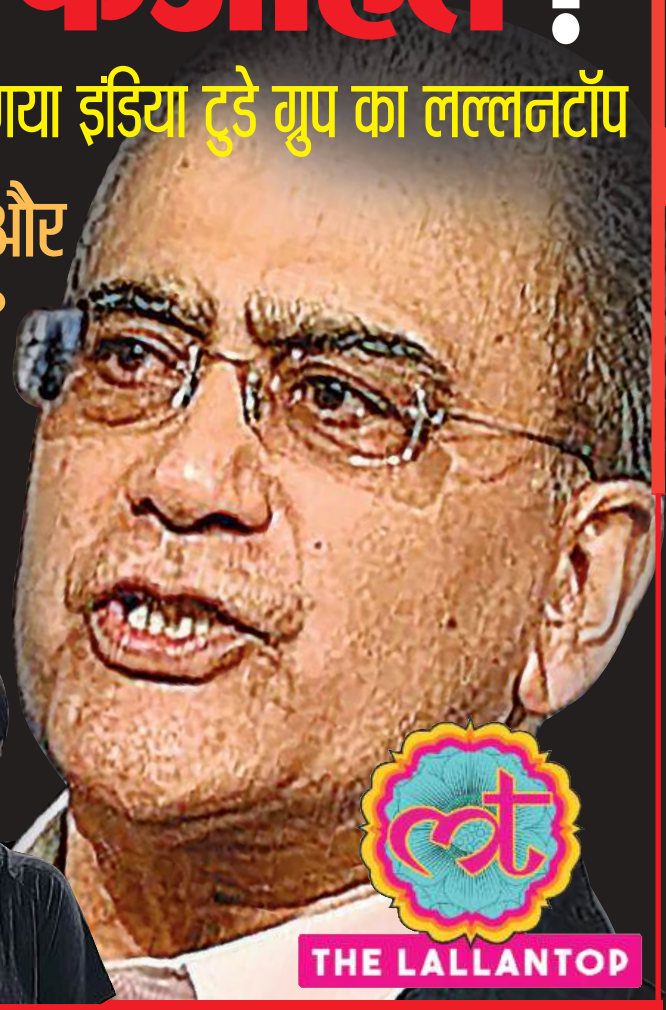

संजय शर्मा का सवाल ब्रांड नहीं पत्रकारिता का है

शहीन प्रकरण में लल्लनटॉप की रिपोर्टिंग का हाल ठीक वैसा ही है जैसे किसी क्रिकेट मैच में बल्लेबाज के चौके-छक्के तो दिखाए जाएं लेकिन स्कोरबोर्ड पर टीम का नाम ही न लिखा जाए। अब सवाल उठेगा तो उठेगा ही भाई अगर कहानी शाहीन और नफीसा की थी तो यह भी तो कहानी का हिस्सा था कि दोनों 4PM की पत्रकार हैं। फिर 4PM का नाम लेने में ऐसी क्या आफत थी। क्या नाम लेने से इंटरव्यू का व्यूअरशिप ग्राफ गिर जाती क्या स्क्रीन पर 4PM लिखते ही एल्गोरिद्म नाराज हो जाता या फिर कहीं ऐसा तो नहीं कि व्यूज अपने क्रेडिट पराया वाला कोई नया डिजिटल पत्रकारिता मॉडल विकसित हो रहा है। किसी पत्रकार की मदद करना और पत्रकारिता में उस पत्रकार की संस्थागत पहचान बताना क्या दोनों एक साथ नहीं हो सकते? क्या एम्स जाने के लिए 4PM का नाम हटाना जरूरी था क्या थाने जाने के लिए 4PM का नाम काटना जरूरी था क्या शाहीन की आवाज उठाने के लिए शाहीन जिस संस्थान से जुड़ी हैं उस संस्थान का उल्लेख करना कोई अपराध है बिल्कुल नहीं यही तो सवाल है कि आखिर ऐसा क्यों किया गया?

सोशल मीडिया पर बहस तेज है और लोग सवाल पूछ रहे

पेड़ की कहानी लिखकर जड़ का नाम भूल गया

संपादक संजय शर्मा की आपत्ति का केंद्र यही है कि पत्रकारिता में सिर्फ कैमरा चलाना काफी नहीं है। जिसने सवाल उठाया उसका नाम भी होना चाहिए जिसने रिपोर्टिंग की उसकी पहचान भी होनी चाहिए और जिस संस्थान ने अपने पत्रकार के साथ खड़े होकर लड़ाई शुरू की उसका संदर्भ भी गायब नहीं होना चाहिए। यही वह बात है जिसे लेकर 4PM ने लल्लनटॉप पर सवाल उठाए हैं। और अब रजत के पलटवार ने इस विवाद को दूसरा आयाम दे दिया है। उन्होंने संजय शर्मा पर यह आरोप लगाया कि वह घटना को 4PM के मार्केटिंग इवेंट में बदलना चाहते हैं। यह गंभीर आरोप है। लेकिन इसका जवाब भी उतना ही सीधा होना चाहिए कि अगर न्याय की मांग करना मार्केटिंग है तो फिर पत्रकारों के अधिकारों की हर लड़ाई को किस खाते में डाला जाएगा? मैं वहां था से बड़ी चीज है कहानी कहां से शुरू हुई रजत का यह कहना महत्वपूर्ण है कि वह एम्स पहुंचे और शाहीन के साथ रहे। लेकिन किसी घटनास्थल पर मौजूदगी पत्रकारिता की पूरी परिभाषा नहीं है। पत्रकारिता केवल यह नहीं पूछती कि कौन वहां था वह यह भी पूछती है कि घटना सामने कैसे आई पहली रिपोर्टिंग किसने की मामले को सार्वजनिक विमर्श में किसने उठाया पीड़ित की आवाज को किसने प्लेटफॉर्म दिया और सबसे जरूरी सवाल कि आखिर जब दूसरे सभी मीडिया संस्थानों ने शाहीन-नफीसा के दर्द को उसके संस्थान के नाम के साथ रिलीज किया तो फिर लल्लनटॉप ने 4PM का नाम क्यों सेंसर किया।

4PM
पूरी खबर हमारे यूट्यूब चैनल 4PM पर

यूपी की सारी लोस सीटें जीतने पर भी ईवीएम का करेंगे विरोध : अखिलेश यादव

सपा अध्यक्ष ने भाजपा पर फिर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने एकबार फिर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन के खिलाफ है तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा चुनावी नतीजों के बावजूद यह रुख कायम रहेगा। उन्होंने भाजपा सरकार पर आजम खान के साथ अन्याय करने और अल्पसंख्यकों को जानबूझकर निशाना बनाने का आरोप लगाया।समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बृहस्पतिवार को कहा कि उनकी पार्टी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) के खिलाफ है और उत्तर प्रदेश की सभी 80लोकसभा सीटें जीतने के बाद भी उसका रुख नहीं बदलेगा।

लखनऊ में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में अखिलेश ने कहा, समाजवादी पार्टी ईवीएम के खिलाफ है। मैंने पहले भी कहा है कि भले ही समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश की सभी 80 लोकसभा सीटें जीत जाए, तब भी वह ईवीएम के खिलाफ है। आजम खान से जुड़े सवाल पर अखिलेश ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार सपा के वरिष्ठ नेता के साथ लगातार अन्याय कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार जानबूझकर अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बना रही है, ताकि एक संदेश दिया जा सके। उन्होंने कहा, इस सरकार में अल्पसंख्यकों के साथ अन्याय किया जा रहा है। अखिलेश ने सहारनपुर में एक मस्जिद के ध्वस्तीकरण का जिक्र करते हुए दावा किया कि इसे 12 घंटे के भीतर गिरा दिया गया। उन्होंने कहा कि एक अन्य स्थान पर भी मस्जिद की जांच की जा रही है।

उन्होंने आरोप लगाया, भाजपा सरकार संदेश देने के लिए अन्याय और अत्याचार कर रही है। कथित अवैध इमारतों के खिलाफ कार्रवाई पर सवाल उठाते हुए अखिलेश ने कहा कि दिल्ली में एक इमारत गिरने से छात्रों की मौत हो गई थी और पूछा कि क्या वह अवैध निर्माण नहीं था।

उन्होंने भाजपा पर बढ़ती महंगाई से ध्यान भटकाने के लिए देश में सांप्रदायिक माहौल बनाने का आरोप लगाया और कहा कि सत्तारूढ़ दल महिलाओं, पिछड़े वर्गों, दलितों और आदिवासियों को आरक्षण देने के खिलाफ है।

भाजपा सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के जरिए चुनाव जीतना चाहती है

मुजफ्फरनगर दंगों की 11वीं बरसी मनाने और कुछ स्थानों पर हिंसा से जुड़े पोस्टर लगाए जाने के सवाल पर यादव ने कहा कि भाजपा सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के जरिए चुनाव जीतना चाहती है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा देश में सांप्रदायिक माहौल बनाना चाहती है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, महंगाई उनके लिए कोई मुद्दा नहीं है और न ही कोई अन्य मुद्दा। देखिए महंगाई किस तरह बढ़ रही है। ऐसी कौन सी चीज है जो महंगी नहीं हुई है? वे न तो यह स्वीकार कर रहे हैं कि महंगाई है और न ही इस समस्या का समाधान कर रहे हैं।

सरकार अपने लोगों को मुनाफा कमाने और भ्रष्टाचार करने की अनुमति दे रही है

उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अपने लोगों को मुनाफा कमाने और भ्रष्टाचार करने की अनुमति दे रही है, जिसकी वजह से महंगाई बढ़ रही है। अखिलेश ने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर के सरकार के दावों पर सवाल उठाते हुए झांसी की एक घटना का जिक्र किया, जिसमें कथित तौर पर एक गरीब व्यक्ति अपनी पत्नी का शव अस्पताल से घर नहीं ले जा सका और अंतिम संस्कार भी नहीं कर पाया तथा उसे शव नदी में फेंकना पड़ा। उन्होंने कहा, जैसा कि हाल में एक अर्थशास्त्री ने सही कहा था, जीडीपी शून्य है।अगर दावे के अनुसार जीडीपी 7.2, 7.8 या 7.9 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है तो फिर एक गरीब व्यक्ति अपनी पत्नी को घर क्यों नहीं ले जा पाया या उसका अंतिम संस्कार क्यों नहीं कर पाया? लखनऊ को राष्ट्रीय स्वच्छ वायु सर्वेक्षण में शीर्ष स्थान मिलने पर तंज कसते हुए यादव ने कहा कि बारिश रुकने और मौसम सामान्य होने के बाद वायु गुणवत्ता की फिर से जांच की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि 27 में सपा के सत्ता में लौटने पर वायु और जल गुणवत्ता तथा पर्यावरण के क्षेत्र में बेहतर काम किया जाएगा।

आप आकाश आनंद को लेकर आइए हम शामिल कर लेंगे

जब उनसे पूछा गया कि यदि आकाश आनंद सपा में शामिल होना चाहें तो क्या उन्हें पार्टी में शामिल किया जाएगा, तो अखिलेश ने कहा, आप उन्हें लेकर आइए, हम उन्हें पार्टी में शामिल कर लेंगे। भाजपा द्वारा सोशल मीडिया पर अन्य दलों के नेताओं के कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) से बनाए गए वीडियो पोस्ट किए जाने के सवाल पर यादव ने कहा, भाजपा किसी की सगी नहीं है। अखिलेश यादव ने घोषणा की कि 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए सपा अपने राज्यव्यापी घोषणापत्र के साथ-साथ प्रत्येक जिले के लिए अलग-अलग घोषणापत्र तैयार करेगी।

भाजपा के साथ रहने पर पद मिलेगा सम्मान नहीं

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश स्थित गोंडा में विनोद साहनी के हत्याकांड के मामले में निषाद पार्टी के अध्यक्ष और योगी सरकार में मंत्री संजय निषाद को सियासी संदेश देने की कोशिश की है। सपा चीफ ने बिना नाम लिखे सोशल मीडिया साइट एक्स पर कहा कि भारतीय जनता पार्टी के साथ रहने पर पद मिल सकता है लेकिन सम्मान नहीं। यूपी के पूर्व सीएम ने लिखा कि भाजपा का राज सत्ता सजातीयों के 'दंभ, घमंड, अहंकार' का आपराधिक त्रिगुट है, जो लोग समझते हैं कि सत्ता के साथ रहकर उनकी इज़्ज़त और रुतबा बढ़ता है, वो भी अब समझ गये हैं कि भाजपा में दिखावे का पद तो मिल सकता है पर सम्मान नहीं।कन्नौज सांसद ने लिखा कि भाजपाई वर्चस्ववादी अपने प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए किसी की हत्या भी कर सकते हैं किसी को भी ज़मीन पर बैठने को मजबूर कर सकते हैं., पीड़ा बढ़ रही है, इसीलिए पीडीए बढ़ रहा है और पीडीए की एकता भी।

अशोक ने खुद को बचाने के लिए दिया इस्तीफा : मायावती

» बसपा प्रमुख बोलीं- और खुलासे करने वाली हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की मुखिया मायावती ने एक बार फिर से भतीजे आकाश आनंद के ससुर अशोक सिद्धार्थ पर गुस्सा कम होने का नाम नहीं ले रहा है। बसपा सुप्रीमो ने एक बार फिर से उन पर बड़ा हमला करते हुए दबाव के बाद भी उन्होंने इस्तीफा नहीं दिया और तमाम हथकंडों को इस्तेमाल कर खुद को बचाने की कोशिश की। मायावती ने ये भी संकेत दिए कि आने वाले समय में और भी खुलासे किए जाएंगे।

बसपा चीफ़ मायावती ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर आज फिर एक लंबी चौड़ी पोस्ट की ।मायावती ने कहा कि जिस दिन बीएसपी ने अशोक सिद्धार्थ को राजनीति से संन्यास लेने की सलाह दी थी तो उस दिन इन्होंने इनके उपर काफी दबाव पड़ने के बावजूद भी अपने संन्यास लेने की घोषणा तब तत्काल नहीं की थी. क्योंकि उस दिन यह पूरी रातभर इसे रुकवाने के लिए क़िस्म-क़िस्म के हथकंडे इस्तेमाल करते रहे।बसपा चीफ ने लिखा कि जिसमें कामयाबी नहीं मिलने पर, फिर मजबूरी में, अगले दिन यह सोच कर इनको लगभग प्रातः 6:30 बजे अपने संन्यास की काफी किन्तु-परन्तु वाली घोषणा करनी पड़ी है, कि कहीं ज्यादा देरी होने पर और भी बड़ा नुकसान ना हो जाये, जिसके बारे में सही समय आने पर पार्टी के लोगों को और भी बहुत कुछ ज़रूर बताया जायेगा। मायावती के इस बयान से साफ है कि आने वाले दिनों में अशोक सिद्धार्थ को लेकर और भी बड़ी बातें सामने आ सकती हैं.। तरह है, उसमें भला कौन शामिल होकर अपने भविष्य को अन्धकार में डालेगा, जबकि खासकर इस पार्टी से दूरी बनाने के लिये बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी ने अपने जीते-जी बहुजन समाज के लोगों को अगाह (चेताया) भी किया था। इसलिये यह सब वर्तमान हालात में, पार्टी व मूवमेन्ट के हित में बीएसपी के लोगों को जानना व समझना भी बहुत जरूरी है तो यह उचित होगा।

नीला रंग अपनाने से जातिवादी सोच नहीं बदलेगी

बसपा सुप्रीमो मायावती ने सपा-कांग्रेस पर हमलावर होते हुए कहा कि नीला रंग अपनाने से विपक्षी दलों की जातिवादी सोच नहीं बदलेगी। बहुजन समाज के हित के लिए पहले अपना दिल और दिमाग साफ करें। मायावती ने एक्स पर कहा कि उन्होंने कहा कि सपा, कांग्रेस व अन्य विरोधी पार्टियों के नेताओं व कार्यकर्ताओं द्वारा बीएसपी का शुरु से ही चला आ रहा नीला रंग अब यह इनके गले का गमछा व कपड़े पहनने से तथा स्टेज आदि में भी नीला कपड़ा इस्तेमाल करने से इनकी सर्वसमाज में से खासकर ग़रीबों, दलितों, आदिवासियों, पिछड़े व अन्य उपेक्षित वर्गों के प्रति वर्षों से चली आ रही इनकी जातिवादी, संकीर्ण, सामन्तवादी एवं पूँजीवादी सोच नहीं बदल सकती है तथा ना ही ये लोग दिल से अम्बेडकरवादी होने एवं कहलाने वाले हैं। इसीलिये 'बहुजन समाज' के वास्तविक हित व कल्याण के प्रति पहले वे अपना दिल व दिमाग तो पाक-साफ करें। वैसे भी ये लोग इन वर्गों के मामले में आए दिन गिरगिट की तरह ही रंग बदलते रहते हैं अर्थात् ये कहते कुछ हैं और करते उसके ठीक विपरीत हैं। खासकर इनके सपा के पीडीए के मामले में तो इनकी सोच, चाल, चरित्र व चेहरा आदि हमेशा दोगला व बईमान ही रहा है, जिसके अनेकों उदाहरण हैं, ये सभी जानते हैं। इसलिए इन वर्गों की एकमात्र हितैषी व अम्बेडकरवादी पार्टी केवल बीएसपी ही है, जो सर्वविदित है।

मुख्यमंत्री बने शिवकुमार के सौ दिन खाली गए : विजयेंद्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरू। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र ने मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार को विज्ञापन वाली सरकार करार दिया। उन्होंने दावा किया कि शिवकुमार सरकार अपने शुरुआती 100 दिन में कोई भी उपलब्धि हासिल नहीं कर सकी। विजयेंद्र ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि कर्नाटक के लोगों ने कांग्रेस को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाने का मन बना लिया है।

उन्होंने दावा किया कि सत्ताधारी पार्टी के विधायक भी सरकार के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। इससे पहले, शिवकुमार ने अपने मुख्यमंत्री कार्यकाल के 100 दिन पूरे होने पर कई नयी पहल की शुरुआत की थी। कांग्रेस आलाकमान के निर्देश पर सिद्धरमैया के 28 मई को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद शिवकुमार ने तीन जून को कार्यभार संभाला था। विजयेंद्र ने एक सवाल के जवाब में कहा, यह सरकार जल्द ही सत्ता से बाहर हो जाएगी। जनता ने पहले ही मन बना लिया है। यहां तक कि सत्ताधारी पार्टी के विधायक भी सरकार और मुख्यमंत्री के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। उन्होंने कहा, इस भ्रष्ट और जन-विरोधी सरकार के खिलाफ हमारी लड़ाई शुरू हो गई है।

भाजपा चुनाव मैदान में अभूतपूर्व जीत हासिल करेगी। न तो डीके (शिवकुमार) और न ही बीके (प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बीके हरिप्रसाद) हमें जीतने से रोक सकते हैं। भाजपा को जनता का आशीर्वाद मिलेगा। विजयेंद्र ने आरोप लगाया कि सरकार लोगों के हित वाले कार्यक्रम शुरू करने में नाकाम रही है और उसने युवाओं की बेरोजगारी की समस्या पर भी ध्यान नहीं दिया है।उन्होंने कहा, इस सरकार की एक भी उपलब्धि नहीं है। घर-घर में लोग खुद यह बात कह रहे हैं। यह कोई लोकप्रिय सरकार नहीं है; यह विज्ञापनों वाली सरकार है। विजयेंद्र ने कहा कि सरकार इस गलतफहमी में है कि वह विज्ञापनों के जरिये जनता का समर्थन हासिल कर सकती है। उन्होंने कहा, आने वाले दिनों में जनता खुद ही इन सब बातों का उचित जवाब देगी। लोग इस सरकार को सबक सिखाएंगे।

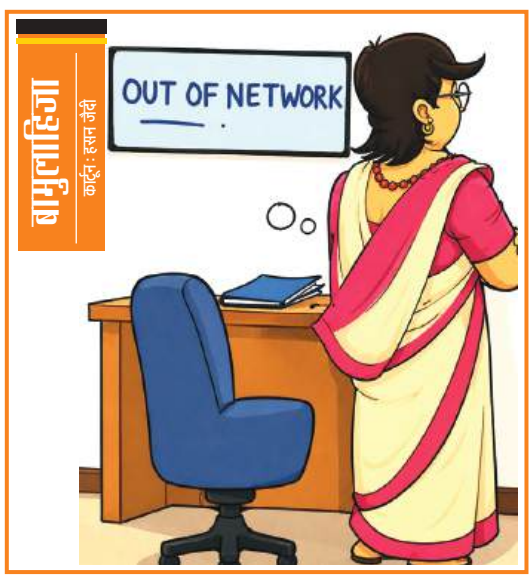

भाजपा विधायक का अवैध पीजी ढहाया जाए : भारद्वाज

आप पार्षदों ने दिल्ली नगर निगम के साउथ ज़ोन ऑफिस का किया घेराव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने सत्य निकेतन-मोती बाग में 200 बेड वाले पीजी की कानूनी वैधता पर सवाल उठाए हैं और इसके कथित मालिकाना हक को भाजपा विधायक अनिल शर्मा के परिवार से जोड़ा है। दिल्ली यूनिट के अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज की अगुवाई में आप पार्षदों ने दिल्ली नगर निगम के साउथ ज़ोन ऑफिस का घेराव किया और दावा किया कि उन्हें पीजी (पेइंग गेस्ट) अकोमोडेशन का बिल्डिंग प्लान मिल गया है।

आप दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया, गुरुवार को मैं साउथ ज़ोन के अपने पार्टी पार्षदों के साथ ग्रीन पार्क स्थित साउथ ज़ोन ऑफिस गया। हमने उस पीजी का बिल्डिंग प्लान और मंज़ूरशुदा नक्शा मांगा, जिसे ऋ पुरम के विधायक अनिल शर्मा ने कानूनी बताया है। कुछ चौंकाने वाली बातें सामने आई हैं। पहली बात यह है कि यह पीजी लगभग 400 से 500 वर्ग गज ज़मीन पर बनाया गया है, जबकि मंज़ूर किया गया बिल्डिंग प्लान सिर्फ़ 230 वर्ग गज के लिए था।

उन्होंने आगे आरोप लगाया कि मंज़ूर प्लान के तहत भी सिर्फ़ 75 प्रतिशत हिस्से पर ही निर्माण की इजाज़त थी, जबकि 25 प्रतिशत हिस्सा खाली छोड़ना ज़रूरी था। आप की दिल्ली यूनिट के प्रमुख ने सवाल उठाया कि ऐसी बिल्डिंग कैसे बन सकती है, और आरोप लगाया कि यह गैर-कानूनी है। भारद्वाज ने कहा, बिल्डिंग प्लान के साथ जो ज़मीन की रजिस्ट्री सौंपी गई थी, वह भी सिर्फ़ 230 स्क्वायर यार्ड की है। इसलिए सवाल यह है कि जिस ज़मीन की रजिस्ट्री सिर्फ़ 230 स्क्वायर यार्ड की है और जहाँ सिर्फ़ 175 स्क्वायर यार्ड के आसपास ही निर्माण हो सकता था, वहाँ 400 से 500 स्क्वायर यार्ड में फैली बिल्डिंग कैसे बन गई। इससे साफ़ है कि यह बिल्डिंग पूरी तरह से अवैध और गैर-कानूनी है।

बंगाल में एक बयान से मचा सियासी घमासान

भाजपा प्रेदश अध्यक्ष के बोली पर बवाल

बोले समिक-गुप्ता-जायसवाल नहीं होते तो बंगाली नहीं बचते

» भाजपा पर भड़का पूरा विपक्ष

» टीएमसी, कांग्रेस व भाकपा ने खोला मोर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। बंगाल में नई सरकार आए चार महीने से ज्यादा दिन हो गए हैं। पर वहां जहां सत्ता पक्ष भाजपा व विपक्ष टीएमसी में वार-पलटवार चलता रहता है। पर अभी सत्तारूढ़ भाजपा के नेताओं के बयान के बाद राज्य में सियासी बवाल जारी है। बंगाल भाजपा अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य ने 1946 के कोलकाता दंगों का जिक्र करते हुए कहा कि गुप्ता और जायसवाल जैसे गैर-बंगाली समुदायों ने उस दौर में बंगालियों का साथ दिया और उन्हें खत्म होने से बचाया। उनके इस बयान पर तृणमूल कांग्रेस, कांग्रेस और माकपा ने सवाल उठाए। आखिर भट्टाचार्य ने ऐसा दावा क्यों किया, इतिहास का कौन सा अध्याय उन्होंने सामने रखा? उनके बयान पर राजनीति क्यों गरमा गई है।

कोलकाता में दुर्गा पूजा की तैयारियों के बीच पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य के एक बयान ने राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया है। उन्होंने 1946 के सांप्रदायिक दंगों का जिक्र करते हुए कहा कि उत्तर कोलकाता में रहने वाले गुप्ता और जायसवाल जैसे गैर-बंगाली समुदायों ने उस कठिन समय में बंगालियों का साथ दिया था। उन्होंने कहा कि इन समुदायों ने अपनी पूरी संपत्ति तक खर्च कर दी थी और बंगालियों को खत्म होने से बचाया था। उनके इस बयान के बाद विपक्षी दलों ने इसे लेकर तीखी प्रतिक्रिया दी है।

भट्टाचार्य ने 1946 के दंगों का जिक्र क्यों किया

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि कोलकाता को समझने के लिए उत्तर कोलकाता को समझना जरूरी है। उन्होंने दावा किया कि मुश्किल दौर में गैर-बंगाली समुदाय बंगालियों के साथ खड़े रहे और एकजुट होकर उनका साथ दिया। इसी संदर्भ में उन्होंने गुप्ता और जायसवाल समुदायों की भूमिका का उल्लेख किया। भट्टाचार्य के मुताबिक, उस समय इन समुदायों ने बंगालियों की मदद की थी। उनके इस बयान को विपक्ष ने इतिहास से जोड़कर सवालों के घेरे में ला दिया है। भट्टाचार्य ने आरोप लगाया कि पिछले कुछ वर्षों में बांग्लादेश से लगे बंगाल के कई इलाकों में दुर्गा पूजा गंभीर संकट का सामना कर रही थी। उन्होंने मुर्शिदाबाद में मूर्ति बनाने वाले पिता-पुत्र हरगोबिंद दास और चंदन दास की हाल की मौत का भी जिक्र किया। उन्होंने आरोप लगाया कि दोनों को देवी काली, सरस्वती और लक्ष्मी की मूर्तियां बनाने की प्रतिभा रखने के कारण कथित तौर पर मार दिया गया। हालांकि, उनके बयान में इन मौतों को लेकर लगाए गए आरोप ही सामने रखे गए।

बेलडांगा में मूर्ति विसर्जन का मुद्दा उठा

भट्टाचार्य ने पुराने तृणमूल कांग्रेस शासन पर तुष्टीकरण की राजनीति का आरोप लगाते हुए बेलडांगा का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि भारत सेवाश्रम संघ की ओर से आयोजित दुर्गा प्रतिमा विसर्जन पहले एक तालाब में करना पड़ता था और आयोजकों को नदी तक पहुंच नहीं मिलती थी। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले शासन में सरकार यह तय करती थी कि विसर्जन कब होगा और उसका कार्यक्रम तक तैयार करती थी। भट्टाचार्य ने कहा कि इस साल बंगाल में अलग तरह की दुर्गा पूजा देखने को मिलेगी। भाजपा नेता ने दावा किया कि इस साल लोग पहले की तरह बंद दरवाजों और यातायात संबंधी पाबंदियों के बीच नहीं, बल्कि आसानी से पूजा पंडालों में जा सकेंगे। उन्होंने कहा कि दुर्गा पूजा शांतिपूर्ण तरीके से होगी और इस दौरान किसी तरह की ऐसी रोक नहीं होगी। साथ ही उन्होंने लंबे समय से अपनी-अपनी समितियों के जरिए पूजा आयोजित कर रहे लोगों के समर्थन की बात कही। उन्होंने चेतावनी दी कि राजनीति के नाम पर किसी पुरानी पूजा समिति से उसके आयोजकों को हटाने की कोशिश हुई तो उनकी पार्टी इसका समर्थन नहीं करेगी।

कांग्रेस ने इसे चुनावी राजनीति बताया

कांग्रेस ने आरोप लगाया कि नगर निकाय चुनाव नजदीक आने के कारण भाजपा नेता लोगों के बीच विभाजन पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। बंगाल प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शुभंकर सरकार ने कहा कि भाजपा बंगाली विरासत को तोड़ने और बांटने की कोशिश कर रही है। उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर का उदाहरण देते हुए कहा कि टैगोर ने बंगाल विभाजन के विरोध में सड़कों पर उतरकर लोगों को एकजुट करने की कोशिश की थी। कांग्रेस ने कहा कि ऐसे बयान कोलकाता की विरासत को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

बाहरी नहीं तय करेंगे बंगाली क्या खाएंगे

दुर्गा पूजा की तैयारियों की औपचारिक शुरुआत

पश्चिम बंगाल बीजेपी अध्यक्ष सामिक भट्टाचार्य ने खुद को भगवान का दूत बताने वाले धीरेंद्र शास्त्री की उस अपील को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने बंगालियों से दुर्गा पूजा के दौरान मांसाहारी भोजन न करने को कहा था। भट्टाचार्य ने कहा कि राज्य में आने वाला कोई भी धार्मिक व्यक्ति यह तय नहीं कर सकता कि लोगों को क्या खाना चाहिए या क्या पहनना चाहिए। शास्त्री, जिन्हें बागेश्वर बाबा के नाम से भी जाना जाता है, ने त्योहार के दौरान मांसाहारी भोजन करने वालों को पाखंडी कहा था और उनसे ऐसा न करने की अपील की थी। इस टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए भट्टाचार्य ने कहा कि राज्य के बाहर से आए किसी व्यक्ति के कहने पर बंगालियों के खान-पान की आदतों और परंपराओं को बदला नहीं जा सकता। भट्टाचार्य ने कहा कि मुझे अपनी मजी से जीने दें। बंगाली वही खाएंगे जो वे खाते आए हैं। क्या बंगाली मछली और मांस नहीं खा सकते? स्वामी विवेकानंद ने ऐसा कहा है। उनसे बड़ा कौन है? उन्होंने आगे कहा कि यहां मां काली को बकरे का मांस चढ़ाया जाता है। बीजेपी के राज्य अध्यक्ष ने अष्टमी पर लुची (पूरी) और नवमी पर बकरे का मांस खाने की पुरानी परंपरा का जिक्र करते हुए कहा कि लोगों से इन रिवाजों को छोड़ने के लिए कहने का कोई सवाल ही नहीं उठता। उन्होंने कहा कि हम आम तौर पर अष्टमी पर लुची और नवमी पर बकरे का मांस खाते हैं। हम ऐसा करना जारी रखेंगे। कोई भी पश्चिम बंगाल के लोगों को यह नहीं बता सकता कि उन्हें क्या खाना चाहिए।

भट्टाचार्य ने यह बातमध्य कोलकाता के बोउबाजार इलाके में आयोजित 'खूंटी पूजा' कार्यक्रम में कही। यह पूजा दुर्गा पूजा की तैयारियों की औपचारिक शुरुआत मानी जाती है। उन्होंने कहा कि उत्तर कोलकाता में खड़े होकर एक बात समझनी चाहिए कि अगर गुप्ता और जायसवाल समुदाय वहां नहीं होते और उन्होंने तलवार बनाने के लिए जरूरी लोहा उपलब्ध कराने में अपनी पूरी संपत्ति नहीं लगा दी होती, तो आज उत्तर कोलकाता के बंगाली भद्रलोक और अभिजात वर्ग का अस्तित्व शायद नहीं होता। उन्होंने लोगों से एकजुट रहने की अपील भी की।

माकपा ने भट्टाचार्य के बयान को इतिहास से जोड़ा?

माकपा नेता सुजन चक्रवर्ती ने भट्टाचार्य की टिप्पणी को इतिहास के खिलाफ बताया। उन्होंने कहा कि बंगाल को बांटने की कोशिश ब्रिटिश शासन के दौर में भी हुई थी और 1905 में लोगों ने उसका विरोध किया था। उनके मुताबिक, 1947 में बंगाल के विभाजन के पीछे साजिश थी। चक्रवर्ती ने कांग्रेस पर भी निशाना साधते हुए कहा कि उस समय कांग्रेस नेतृत्व के एक बड़े हिस्से ने सत्ता के बंटवारे का समर्थन जारी रखा था। उन्होंने श्यामा प्रसाद मुखर्जी और हिंदू महासभा की भूमिका को भी इस संदर्भ में अलग तरीके से पेश किया।

तृणमूल कांग्रेस ने बयान पर आपत्ति जताई?

तृणमूल कांग्रेस के प्रवक्ता कुणाल घोष ने भट्टाचार्य के बयान को बंगालियों का अपमान बताया। उन्होंने कहा कि बंगालियों की अपनी परंपरा, पहचान और स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास है। घोष ने कहा कि उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि कोई यह कहेगा कि गुप्ता और जायसवाल समुदायों के साथ खड़े नहीं होने पर बंगाली बच नहीं पाते। उनका कहना था कि बंगालियों की अपनी पहचान और विशिष्टता है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

जिद... सच की

जानलेवा पेस्टीसाइड से कब मिलेगी निजात

अभी हाल में एक खबर आई थी कि भारत में अन्न को कीड़ों मौकोड़े सेबचाने के लिए पेस्टीसाइड का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है। जिससे जानवरों के साथ मानव स्वास्थ्य भी शिकार बन रहा है। जानलेवा बीमारियां बढ़ रही हैं। उधर सरकार ढोल पिटती है कि वह परंपरगात साधनों को बढ़ावा दे रही है। पर इस तरह की खबरें उसको मुंह चिढ़ा रही हैं। सरकारों को चाहिए कि बेहतर नीति से इस समस्या का हल निकाला जा सकता है। भारत को अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाने वाले किसान की सुरक्षा को लेकर सामने आए आंकड़े किसी भी संवेदनशील समाज को झकझोरने के लिए काफी हैं। पेस्टिसाइड एक्शन नेटवर्क के हालिया अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में कीटनाशक विषाक्तता से होने वाली करीब 11 हजार मौतों में से 60 प्रतिशत भारत में होती हैं। अध्ययन बताता है कि दुनिया के करीब 93.4 करोड़ किसानों और कृषि श्रमिकों में से 43.3 करोड़ यानी लगभग 46 प्रतिशत हर साल किसी न किसी रूप में कीटनाशक के जहर का शिकार होते हैं। चिंता की बात यह भी है कि 2023 में विश्व भर में करीब 38 लाख टन कीटनाशकों का इस्तेमाल हुआ, जो 1990 की तुलना में लगभग दोगुना है।

हरित क्रांति के बाद से उत्पादकता बढ़ाने की होड़ में हमने रासायनिक निर्भरता को लगातार बढ़ाया लेकिन इस्तेमाल करने वालों की सुरक्षा की उतनी ही अनदेखी की जाती रही।भारत में यह संकट इसलिए और गंभीर हो जाता है क्योंकि यहां छोटे और सीमांत किसान, जिनकी संख्या देश में सबसे अधिक है, अक्सर बिना उचित प्रशिक्षण, बिना सुरक्षा उपकरणों और बिना किसी निगरानी के कीटनाशकों का छिड़काव करते हैं। दस्ताने, मास्क या सुरक्षा चश्मे जैसी बुनियादी सावधानियां तो दूर, कई बार किसानों को यह भी नहीं पता होता कि किस रसायन की कितनी मात्रा सुरक्षित है। खेतों में नंगे हाथों से कीटनाशक घोलना, हवा की दिशा का ध्यान न रखते हुए छिड़काव करना और छिड़काव के तुरंत बाद उन्हीं कपड़ों में परिवार के बीच लौट आना- ये दृश्य हमारे ग्रामीण इलाकों में आम हैं। लंबे समय तक कीटनाशकों के संपर्क से पार्किंसन जैसी गंभीर बीमारियां भी जन्म ले रही हैं। यह आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य से जुड़ा दीर्घकालिक संकट है। आखिर जिम्मेदारी किसकी है? यह ठीक है कि किसान संगठनों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने समय-समय पर सुरक्षित कीटनाशक इस्तेमाल को लेकर जागरूकता अभियान चलाए हैं, लेकिन यह प्रयास तब तक अधूरा रहेगा जब तक सरकार इसे सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं बनाती। पहली आवश्यकता इस बात की है कि सभी किसानों को कीटनाशक के सुरक्षित इस्तेमाल का प्रशिक्षण दिया जाए।

“ भारत को अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाने वाले किसान की सुरक्षा को लेकर सामने आए आंकड़े किसी भी संवेदनशील समाज को झकझोरने के लिए काफी हैं। पेस्टिसाइड एक्शन नेटवर्क के हालिया अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में कीटनाशक विषाक्तता से होने वाली करीब 11 हजार मौतों में से 60 प्रतिशत भारत में होती हैं।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

वि.वि. परिसरों में हॉस्टल बनने से टलेंगे हादसे

अभय मौर्य

दिल्ली में सत्य निकेतन हादसा बेहद अफसोस की बात है जिसके होने के लक्षण पहले ही नजर आ रहे थे। यानी पूरी-पूरी आशंकाएं थीं। गंभीर इंसानी लापरवाही की वजह से हुई इस त्रासदी में कई छात्रों की जानें चली गईं। इसका मूल कारण है दिल्ली यूनिवर्सिटी में हॉस्टल की अपर्याप्त सुविधाएं। लेखक मास्को विश्वविद्यालय में पीएचडी करने के दौरान वहां के छात्रावास में वे चार वर्ष रहे। हॉस्टल के हर कोने में रसोई आदि सुविधाएं थीं जहां कभी-कभार अपनी मर्जी का खाना बना सकते थे। इसके अलावा वहां बड़े-बड़े भोजनालयों की भरमार थी। वहां छात्रों को रोजमर्रा की जरूरतों की चिंता नहीं करनी पड़ती थी। वे दिल लगाकर पढ़ाई कर सकते थे। सप्ताहांत के समय छात्रावास में विविध रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का छात्र स्वयं आयोजन करते थे। सभी को अपनी कलात्मक व सृजनात्मक प्रतिभा चमकाने का अवसर मिलता था। कलात्मक ढंग से नाचना या गाना सीख सकते थे।

इन सब हुनरों का विकास करने का अवसर छात्रावासों में ही मिलता था। मास्को विश्वविद्यालय में छात्रावास सुविधा नि:शुल्क थी। निवास के अलावा जिम, चिकित्सालय व रोजमर्रा की सभी जरूरी सुविधायें छात्रावास कैम्पस में थीं। यानी हॉस्टल घर से दूर घर जैसा माहौल प्रदान करते थे। ऐसा ही अनुभव कुछ-कुछ स्वीडन और फिनलैंड में भी मिलता है। लेकिन वहां के छात्रावास महंगे होते थे जो बहुत सारे छात्रों के सामर्थ्य से बाहर होते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापक बनने पर इस यूनिवर्सिटी के तीन पोस्ट-ग्रेजुएट हॉस्टलों की मैनेजमेंट से जुड़ने का अवसर मिला- जुबली हॉल और पीजी मेन्स हॉस्टल के प्रोवोस्ट और ग्वायर हॉल के रेजिडेंट ट्यूटर के तौर पर। इससे दिल्ली यूनिवर्सिटी में छात्रावासों की कमी की गंभीरता को समझने और खुद के छात्रावासीय जीवन के संदर्भ में समझने का अवसर मिला। निस्संदेह, निराशा पैदा होनी स्वाभाविक थी कि दिल्ली यूनिवर्सिटी में छात्रावास सुविधा बेहद कम है। विश्वविद्यालय में 80 से ज्यादा कॉलेज हैं जिनमें से मात्र दस में छात्रावास हैं।

इनमें ज्यादातर कॉलेज डीयू के मेन कैंपस में हैं - मिरांडा हाउस, सेंट स्टीफंस, हिंदू कॉलेज हंसराज, रामजस, किरोड़ीमल, एसआरसीसी , डीआर,आईपी आदि कॉलेज छात्रावास की सुविधा देते हैं। मेन कैंपस के बाहर, सिर्फ लेडी श्रीराम कॉलेज में हॉस्टल है। इन कालेजों के छात्रावासों में भी दिल्ली से बाहर से आने वाले सभी छात्रों को जगह नहीं मिलती। छात्र रहने के लिए

मारे-मारे फिरने को मजबूर होते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय में दिल्ली से बाहर के छात्रों की स्थिति दयनीय ही कही जा सकती है। यहां के 50 से अधिक पोस्ट ग्रेजुएट विभागों के लिए कुल 7-8 हॉस्टल हैं जुबली हॉल, ग्वायर हॉल, पीजी मेन्स और विमेंस हॉस्टल, दो इंटरनेशनल हॉस्टल और नॉर्थ-ईस्ट के छात्रों के लिए एक हॉस्टल। साउथ कैंपस में सिर्फ एक महिला छात्रावास है। सभी अंडर-ग्रेजुएट और पोस्ट-ग्रेजुएट हॉस्टलों में लगभग 2,500 छात्रों के रहने की जगह है। जबकि ज़रूरत दसियों हज़ारों छात्रावास के कमरों की है। पर हमारे देश में आधुनिक सुविधाओं के बारे में सोचता कौन है? रहने के लिए बस एक खटिया मिल जाए तो भाग्यशाली समझो। पर वह भी मुहैया नहीं होती छात्रावासों में। सिर्फ पुराने कॉलेजों में ही हॉस्टल की सुविधा है, वह भी नाममात्र की। दिल्ली में अलग-अलग सरकारों के समय लगभग 57 कॉलेज बने। उनमें से किसी ने भी अपने कैंपस में हॉस्टल सुविधा देने की कोशिश नहीं की। बस कालेज बनाकर नाम कमाते रहे। बाहरी छात्रों को अपने देश की राजधानी में पढ़ने का पूरा अधिकार है। पर यह हक हजारों जोखिमों से भरा है, जान तक का जोखिम लेना पड़ता है। सत्यनिकेतन में यही हुआ। यूजीसी भी इस गंभीर अनदेखी में हिस्सेदार मानी जा सकती है। वह न तो अपने फंड से बने नए कॉलेजों के लिए हॉस्टल की सुविधा जरूरी मानती है, और न ही यह शर्त रखती है कि कॉलेजों में दूसरे इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ हॉस्टल भी बनाए जाएं। छात्रावासों के बारे में सोचा ही नहीं जाता, मानो छात्रों को रहने-खाने की जरूरत ही नहीं। यूनिवर्सिटी प्रशासन को भी अपने विभागों और कॉलेजों के लिए हॉस्टल इंफ्रास्ट्रक्चर न बना पाने की जिम्मेदारी लेनी चाहिये।

दरअसल, यूनिवर्सिटी प्रशासन हॉस्टल बनाने से बचता रहा है- वह हॉस्टलों को बहुत बड़ी परेशानी और सिरदर्दी का स्रोत मानता रहा है। मानो वे शिक्षा के लिए अनावश्यक हों। लेखक के मुताबिक, कॉलेज मैनेजमेंट के लिए जिम्मेदार एक डीन अक्सर कहते थे कि यूनिवर्सिटी के लिए हॉस्टल बेवजह की परेशानियां खड़ी करते हैं। अमूमन विवि प्रशासन के कई लोग जेएनयू का उदाहरण देते हैं, जहां कथित तौर पर कुछ ज्यादा ही आजादी होती है, छात्र स्वच्छंद और उन्मुक्त हो जाते हैं।

चेक बाउंस विवादों में तकनीक बने समाधान

डॉ. सुधीर कुमार

देश की अदालतों में करोड़ों लंबित मामलों में से एक-तिहाई से ज्यादा हिस्सेदारी अकेले नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट्स एक्ट की धारा 138 यानी चेक बाउंस के मामलों की है। सुप्रीम कोर्ट से लेकर जिला अदालतों तक, चेक बाउंस के लाखों मामले लंबित हैं। कानूनी जानकारों का मानना है कि इनमें से अधिकांश विवाद वित्तीय लेन-देन से जुड़े असंतोष या छोटी-मोटी चूकों के कारण होते हैं। इसके बावजूद, एक साधारण-सा चेक बाउंस होने पर कानूनी नोटिस भेजने से लेकर अदालत में समन जारी होने, गवाही, जिरह और फैसले तक पहुंचने में वर्षों लग जाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने भी कई मामलों में माना है कि इन मुकदमों का अंतहीन चलना व्यापारिक जगत और न्यायपालिका, दोनों के लिए घातक है। इस संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय के दो महत्वपूर्ण और लैंडमार्क फैसले हैं।

अप्रैल 2021 में सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्वत: संज्ञान लिए गए मामले 'इन री एक्सपीडिशियस ट्रायल ऑफ केसेज अंडर सेक्शन 138 ऑफ एनआई एक्ट, 1881 (2020)' में बड़ी बेंच ने इस बात पर गंभीर चिंता जताई थी कि देश की अदालतों में चेक बाउंस के लाखों मामले लंबित हैं और इनका अंतहीन चलना न्याय व्यवस्था व व्यापारिक माहौल, दोनों के लिए घातक है। इसके साथ ही, 'दशरत रूपसिंह राठौड़ बनाम महाराष्ट्र' (2014) के ऐतिहासिक मामले में भी न्यायालय ने यह रेखांकित किया है कि पारंपरिक मुकदमेबाजी में वादी और प्रतिवादी, दोनों का धन, समय और मानसिक सुकून नष्ट होता है। न्यायालयों ने कई बार मध्यस्थता और त्वरित न्याय प्रणालियों पर जोर दिया है, क्योंकि जिस मामले को बैंक स्तर पर या चंद दिनों में सुलझाया जा सकता है, उसे वर्षों तक कचहरी के चक्कर कटवाए जाते हैं। इस स्थिति में हमें लीक से हटकर सोचना होगा और एक ऐसा क्रांतिकारी मॉडल अपनाना होगा, जो पूरी तरह तकनीक पर आधारित हो। यहां एक अनूठा और आधुनिक तरीका काम आ सकता है—'स्मार्ट-ब्रीच ऑटो-रेजोल्यूशन पोर्टल'। कल्पना कीजिए कि जैसे ही किसी व्यक्ति का चेक बैंक में अपर्याप्त राशि के कारण बाउंस होता है, पारंपरिक कागजी प्रक्रिया शुरू होने के बजाय एक स्वचालित डिजिटल ट्रिगर सक्रिय हो जाए।

इस नए मॉडल के तहत, बैंक स्तर पर ही एक ऐसा स्मार्ट सॉफ्टवेयर काम करे, जो तुरंत संबंधित व्यक्ति के खाते से एक निश्चित डिजिटल पेनल्टी और मूल राशि का आंशिक या पूर्ण ट्रांसफर सुनिश्चित करे; बशर्ते दोनों पक्षों के बीच पहले से डिजिटल एग्रीमेंट हो। यदि राशि को लेकर विवाद है, तो मामला सीधे कोर्ट जाने के बजाय ऑनलाइन डिस्प्यूट रेजोल्यूशन प्लेटफॉर्म पर डायवर्ट हो जाए। ऑनलाइन डिस्प्यूट रेजोल्यूशन एक ऐसा वर्चुअल कोर्ट रूम या मध्यस्थता मंच है, जहां कोई वकील, कोई तारीख और कोई कागजी फाइल नहीं होती। दोनों पक्ष घर बैठे अपने स्मार्टफोन या कंप्यूटर के जरिए अपने दस्तावेज अपलोड करते हैं।

एक प्रशिक्षित एआई-असिस्टेड मीडिएटर या डिजिटल एल्गोरिद्म दोनों पक्षों के डिजिटल रिकॉर्ड को खंगालकर 7 से 15 दिनों के भीतर एक बाध्यकारी समझौता प्रस्ताव तैयार कर देता है। यदि कोई पक्ष इसका उल्लंघन करता है, तो उसका क्रेडिट इंफॉर्मेशन ब्यूरो इंडिया लिमिटेड यानी सिबिल स्कोर स्वत: डाउन हो जाता है और उसके अन्य बैंक खातों पर स्वचालित डिजिटल होल्ड लग जाता है। यह तरीका न केवल अदालतों का बोझ कम करेगा, बल्कि आम आदमी को मानसिक तनाव से भी मुक्ति दिलाएगा। डिजिटल न्याय प्रणाली की सफलता के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी समझ, इंटरनेट और स्मार्टफोन की कमी जैसी व्यावहारिक बाधाओं को दूर करना आवश्यक है। ग्राम स्तर पर कॉमन सर्विस सेंटर या जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से डिजिटल हेल्प डेस्क बनाए जाने चाहिए, ताकि मुफ्त या कम शुल्क में तकनीकी सहायता मिल सके। जब तक डिजिटल साक्षरता और समावेशी मॉडल विकसित नहीं होंगे, तब तक न्याय का स्थानीयकरण अधूरा रहेगा। कानूनी ढांचे में दूरगामी बदलाव करते हुए सबसे पहले चेक बाउंस जैसे मामलों में प्री-लिटिगेशन मेडिएशन को अनिवार्य किया जाना चाहिए, जिससे बैंक खाते से संदेश आते ही 15 दिनों की ऑनलाइन बातचीत के जरिए आधे से अधिक मामले अदालत पहुंचने से पहले ही सुलझ सकें। इसके साथ ही, कंपाउंडिंग यानी समझौते के नियमों का स्वत: क्रियान्वयन लागू होना चाहिए, ताकि आरोपी द्वारा डिजिटल माध्यम से मूल राशि व हर्जाना जमा करते ही, बिना अदालती चक्कर और जज की अनुमति के, मामला स्वत: समाप्त होकर सिस्टम से केस क्लोजर रिपोर्ट जारी हो सके। बाउंस के मामलों में लोग जेल जाने के डर से भागते फिरते हैं या कानून की कमजोरियों का फायदा उठाकर वर्षों तक तारीखें लेते रहते हैं।

हमें जेल भेजने की पुरानी ब्रिटिशकालीन मानसिकता से बाहर निकलकर कड़े वित्तीय दंड और दीर्घकालिक सिबिल पाबंदियों को सबसे बड़ा हथियार बनाना होगा। जानबूझकर चेक बाउंस करने वालों पर चेक राशि का 3 से 5 गुना भारी जुर्माना लगाया जाए, जो सीधे पीड़ित को मिले, और उनका सिबिल स्कोर इतना गिरा दिया जाए कि वे अगले 5 वर्षों तक नया लोन या क्रेडिट कार्ड न पा सकें। जब व्यक्ति के वित्तीय जीवन पर सीधा प्रहार होगा, तो वह अदालती चक्कर काटने के बजाय समय पर भुगतान करना खुद-ब-खुद सीख जाएगा। जब तक हम प्री-लिटिगेशन मेडिएशन, ऑनलाइन डिस्प्यूट रेजोल्यूशन और डिजिटल ऑटोमेशन को न्याय प्रणाली का हिस्सा नहीं बनाएंगे।

शुभ मुहूर्त

गणेश चतुर्थी 14 सितंबर, दिन सोमवार को पड़ रही है। 14 सितंबर को विनायक चतुर्थी यानी गणेश पूजा का समय सुबह 11 बजकर 1 मिनट से लेकर दोपहर 1 बजकर 28 मिनट तक रहेगा।

सिद्धि-सदन, गज बदन, विनायक...

भगवान गणेश को सभी संकटों को हरने वाला और सभी बाधाओं को दूर करने वाला देवता माना गया है। भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को हर साल गणेश चतुर्थी मनाई जाती है। गणेश चतुर्थी का पर्व भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र गणेशजी को समर्पित होता है। इस दिन घर-घर में गणेशजी बैठाए जाते हैं। घरों के अलावा जगह-जगह पर पंडाल सजाए जाते हैं। इसके बाद 11 वें दिन बप्पा को पूरे गाजे-बाजे के साथ विदा कर दिया जाता है। यानी मूर्ति विसर्जन कर दिया जाता है। गणेश भगवान को विदाई देने के साथ ही भक्त अगले साल उनके जल्दी आने की कामना करते हैं।

पूजन विधि

गणेश चतुर्थी तिथि पर शुभ मुहूर्त को ध्यान में रखकर सबसे पहले अपने घर के उत्तर भाग, पूर्व भाग, अथवा पूर्वोत्तर भाग में गणेश जी की प्रतिमा रखें। फिर पूजन सामग्री लेकर शुद्ध आसन पर बैठें। सर्वप्रथम गणेश जी को चौकी पर विराजमान करें और नवग्रह, षोडश मातृका आदि बनाएं। चौकी के पूर्व भाग में कलश रखें और दक्षिण पूर्व में दीया जलाएं। अपने ऊपर जल छिड़कते हुए? पुण्डरीकाक्षाय नमः कहते हुए भगवान गणेश को प्रणाम करें और तीन बार आचमन करें तथा माथे पर तिलक लगाएं। हाथ में गंध अक्षत और पुष्प लें और दिए गए मंत्र को पढ़कर गणेश जी का ध्यान करें। इसी मंत्र से उन्हें आवाहन और आसन भी प्रदान करें। पूजा के आरंभ से लेकर अंत तक अपने जिह्वा पर हमेशा? श्रीगणेशाय नमः। गं गणपतये नमः। मंत्र का जाप अनवरत करते रहें। आसन के बाद गणेश जी को स्नान कराएं। पंचामृत हो तो और भी अच्छा रहेगा और नहीं हो तो शुद्ध जल से स्नान कराएं। उसके बाद वस्त्र, जनेऊ, चंदन, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, फल आदि जो भी संभव यथाशक्ति उपलब्ध हो उसे चढ़ाएं। आखिर में गणेश जी की आरती करें और मनोकामना पूर्ति के लिए आशीर्वाद मांगे।

क्यों मनाते हैं?

कहा जाता है कि भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी के दिन ही कैलाश पर्वत से माता पार्वती के साथ गणेश जी का आगमन हुआ था। इसलिए इस दिन को गणेश चतुर्थी के रूप में मनाया जाता है। भगवान गणेश बुद्धि के दाता है। बता दें कि कई जगहों पर इस त्योहार को विनायक चतुर्थी और विनायक चविटी के नाम से भी जाना जाता है।

मंत्र

ॐ गं गणपतये
सर्व कार्य
सिद्धि कुरु
कुरु
स्वाहा

गणेश जी का जन्म

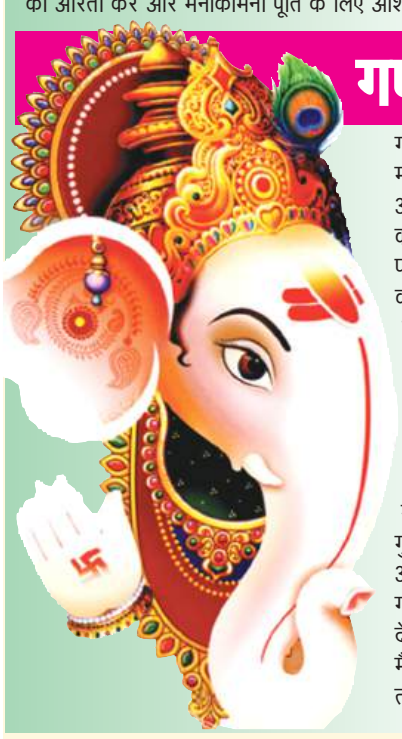

गणेश चतुर्थी की कथा के अनुसार,एक बार माता पार्वती ने स्नान के लिए जाने से पूर्व अपने शरीर के मैल से एक सुंदर बालक को उत्पन्न किया और उसे गणेश नाम दिया। पार्वतीजी ने उस बालक को आदेश दिया कि वह किसी को भी अंदर न आने दे,ऐसा कहकर पार्वती जी अंदर नहाने चली गई। जब भगवान शिव वहां आए ,तो बालक ने उन्हें अंदर आने से रोका और बोले अन्दर मेरी मां नहा रही है,आप अन्दर नहीं जा सकते। शिवजी ने गणेशजी को बहुत समझाया,कि पार्वती मेरी पत्नी है। पर गणेशजी नहीं माने तब शिवजी को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने गणेशजी की गर्दन अपने त्रिशूल से काट दी और अन्दर चले गये। जब पार्वतीजी ने शिवजी को अन्दर देखा तो बोली कि आप अन्दर कैसे आ गए। मैं तो बाहर गणेश को बिठाकर आई थी। तब शिवजी ने कहा कि मैंने उसको मार दिया। तब पार्वती जी रौद्र रूप धारण कर लिया और कहा कि जब आप मेरे पुत्र को वापस जीवित करेंगे तब ही मैं यहां से चलूंगी अन्यथा नहीं। शिवजी ने पार्वती जी को मनाने की बहुत कोशिश की पर पार्वती जी नहीं मानी। सारे देवता एकत्रित हो गए सभी ने पार्वतीजी को मनाया पर वे नहीं मानी। तब शिवजी ने विष्णु भगवान से कहा कि किसी ऐसे बच्चे का सिर लेकर आये जिसकी मां अपने बच्चे की तरफ पीठ करके सो रही हो। विष्णुजी ने तुरंत गरूड़ जी को आदेश दिया कि ऐसे बच्चे की खोज करके तुरंत उसकी गर्दन लाई जाए। गरूड़ जी के बहुत खोजने पर एक हथिनी ही ऐसी मिली जो कि अपने बच्चे की तरफ पीठ करके सो रही थी। गरूड़ जी ने तुरंत उस बच्चे का सिर लिया और शिवजी के पास आ गये। शिवजी ने वह सिर गणेश जी के लगाया और गणेश जी को जीव दान दिया,साथ ही यह वरदान भी दिया कि आज से कही भी कोई भी पूजा होगी उसमें गणेशजी की पूजा सर्वप्रथम होगी।

हंसना मना है

हम तो ऐसे ही उदासी में बैठे-बैठे पानी में पत्थर मार रहे थे, अचानक से एक मेंढ़क निकला और बोला, पानी में तो आ, तेरी उदासी उतारूं। तेरी वाली के चक्कर में तूने, मेरी वाली का सर फोड़ दिया।

संता: डॉक्टर साहब, प्लास्टिक सर्जरी में कितना खर्चा आएगा? डॉक्टर: 50 हजार सांता: अगर प्लास्टिक मैं लेकर दूं तो? डॉक्टर: तो पिघला कर चिपका भी लेना।

एक सफल आदमी वो है जो अपनी बीवी के खर्च से ज्यादा कमा सके। एक सफल औरत वो होती है जो ऐसा आदमी खोज सके।

पापा: दिन भर फेसबुक पर बैठा रहता है, ये तुझे रोटी नहीं देने वाली, बेटा: पापा मुझे भी पता है रोटी नहीं देगी, पर रोटी बनाने वाली तो यही मिलेगी!

शादी करनी हो तो अपनी गर्लफ्रेंड से करो। दूसरों की गर्लफ्रेंड से तो, घरवाले भी करवा देते है।

कहानी — चालाक लोमड़ी

एक जंगल में गधा, लोमड़ी और शेर के बीच अच्छी दोस्ती हो गई। तीनों ने एकदिन शिकार करने के बारे में सोचा। जो भी मिलेगा उसपर तीनों का बराबर हक होगा। कुछ ही दूरी पर उन तीनों को हिरण दिखा। तीनों ने हिरण पर झपट्टा मारने की कोशिश की। उसे देखते ही वो तेजी से दौड़ने लगा। दौड़ते-दौड़ते थककर हिरण कुछ देर के लिए रुक गया। तभी मौका देखकर शेर ने हिरण का शिकार कर दिया। मरे हुए हिरण के तीन हिस्से करने के लिए शेर ने अपने दोस्त गधे को कहा। उसी हिसाब से गधे ने शिकार को तीन बराबर हिस्सों में बांट दिया। ये देखकर शेर को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। वो गुस्से में जोर-जोर से दहाड़े मारने लगा। शेर ने गधे पर हमला करके उसे अपने दांतों और पंजों की मदद से दो हिस्से में बांट दिया। तभी शेर ने एकदम से लोमड़ी को कहा, चलो दोस्त अब तुम इस शिकार का अपना हिस्सा ले लो। लोमड़ी चालाक और समझदार दोनों ही थी। उसने बड़ी ही अकलमंदी के साथ हिरण के शिकार का तीन चौथाई हिस्सा शेर को दे दिया और खुद के लिए एक चौथाई हिस्सा ही बचाया। इस तरह हुए शिकार के हिस्से से शेर काफी खुश हो गया। उसने हंसते हुए लोमड़ी से कहा कि अरे वाह! तुमने एकदम मेरे मन का काम किया है। तुम्हारा दिमाग काफी तेज है।' इतना कहते ही शेर ने लोमड़ी से पूछा, 'तुम इतनी समझदार कैसे हो? तुम्हें कैसे पता चला कि मैं क्या चाहता हूं? तुमने इतना अच्छे से शिकार का हिस्सा लगाना कहां से सीखा है?' लोमड़ी बोली कि आप जंगल के राजा हैं और आपको कैसे हिस्सा लगाना है, ये समझना मुश्किल नहीं है। साथ ही मैंने उस गधे की हालत भी देख ली थी। उसके साथ जो कुछ भी हुआ उससे सीख लेते हुए मैंने ऐसी समझदारी दिखाई है।' जवाब सुनकर शेर काफी खुश हुआ। उसने कहा कि तुम सच में बुद्धिमान हो।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष
कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों से पूरा सहयोग मिलेगा। नई जिम्मेदारी मिलने के योग हैं। व्यापारिक विस्तार की योजना सफल होगी। किसी नए सौदे से लाभ संभव है।

वृषभ
अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। आपके काम की सराहना होगी। कारोबार में साझेदारी के कामों में अच्छा मुनाफा होने की संभावना है। मानसिक शांति बनी रहेगी।

मिथुन
दफ्तर में काम का दबाव अधिक रह सकता है। संयम से काम लें। लेनदेन में सतर्कता बरतें। किसी नई योजना पर विचार हो सकता है। आय सामान्य रहेगी।

कर्क
सहकर्मियों के साथ तालमेल बिठाकर चलें। विवादों से दूर रहना ही बेहतर है। पुराने निवेश या सौदों से लाभ मिलने के संकेत हैं। अचानक धन लाभ का योग बन रहा है।

सिंह
नेतृत्व क्षमता का विकास होगा। नए प्रोजेक्ट में सफलता मिलने के योग हैं। सरकारी क्षेत्र से जुड़े व्यापारियों को बड़ा फायदा हो सकता है। पुरानी समस्या से राहत मिलेगी।

कन्या
चंद्रमा आपकी ही राशि में गोचर कर रहा है, जिससे आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। दफ्तर में अपनी योजनाओं को सही समय पर क्रियान्वित करें।

तुला
12वें भाव में चंद्रमा का गोचर होने से काम में भागदौड़ और व्यस्तता रहेगी। कला, फैशन और सौंदर्य से जुड़े व्यवसाय में मध्यम लाभ होगा। दांपत्य जीवन में संयम बनाए रखें।

वृश्चिक
11वें भाव में चंद्रमा का गोचर आपकी मेहनत का पूरा फल देगा। किसी बड़े ग्राहक या कंपनी से जुड़ने का अवसर मिल सकता है। शारीरिक स्फूर्ति बनी रहेगी।

धनु
10वें भाव का गोचर करियर और शिक्षा से जुड़े कार्यों में शुभ परिणाम देगा। व्यापार में नए संपर्क लाभ देंगे। लव पार्टनर के साथ संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे।

मकर
भाग्य स्थान (9वें भाव) का चंद्रमा मिलने से रुके हुए काम पूरे होंगे। कारोबार में दिन के दूसरे भाग में तेजी देखने को मिलेगी। पार्टनर की भावनाओं का सम्मान करें।

कुम्भ
8वें भाव में चंद्रमा का गोचर होने से किसी भी निर्णय में जल्दबाजी न करें। पार्टनरशिप में पारदर्शिता बनाए रखें, काम पर ध्यान दें। वाणी में सौम्यता रखें, विवादों से बचें।

मीन
7वें भाव का गोचर व्यापार और दांपत्य जीवन के लिए उत्तम रहेगा। नए निवेश के लिए अनुकूल समय है, धन वृद्धि होगी। जीवनसाथी का भरपूर सहयोग और समर्थन मिलेगा।

'डायन बहू' बनकर ससुराल पहुंचीं यामी

यामी गौतम धर के फैंस के लिए एक जबरदस्त खुशखबरी है। अमेजन MGM स्टूडियोज और कलर येलो ने अपनी आने वाली थिएट्रिकल फिल्म नयी नवेली का ऑफिशियल टीजर रिलीज कर दिया गया है। टीजर की पहली झलक

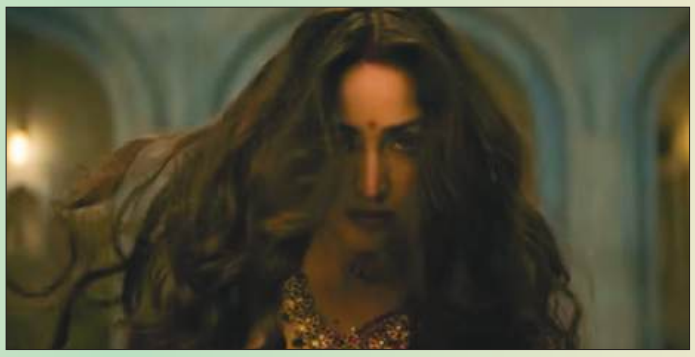

देखकर इतना तो साफ है कि फिल्म में कुछ हटकर देखने को मिलने वाला है। कहानी में फैमिली ड्रामा के साथ हंसी-मजाक, फैंटेसी और एक्शन का ऐसा तड़का लगाया गया है, जो इसे एक फुल एंटरटेनमेंट पैकेज बनाता है। फिल्म में यामी गौतम धर लीड रोल में नजर आएंगी और उनका अंदाज भी काफी दिलचस्प लग रहा है।

नयी नवेली की कहानी हिमांशु शर्मा और दिव्य निधि शर्मा ने लिखी है, जबकि फिल्म की कमान बालाजी मोहन ने संभाली है। वहीं, इसका म्यूजिक जी. वी. प्रकाश कुमार ने तैयार किया है। फिल्म को आनंद एल। राय और हिमांशु शर्मा ने प्रोड्यूस किया है। अब देखना होगा कि नयी नवेली की ये अनोखी कहानी ऑडियंस को कितना पसंद आती है। फिल्म 16 अक्टूबर 2026 को पूरे भारत में सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

यामी गौतम धर की आने वाली फिल्म नयी नवेली का टीजर कहानी को लेकर जबरदस्त एक्साइटमेंट पैदा करता है। शुरुआत में सब कुछ एक नॉर्मल फैमिली जैसी ही नजर आती है, लेकिन तभी जीजा ऐसा दावा कर देता है कि माहौल ही बदल जाता है। भाभी डायन है इसके बाद परिवार में अजीब घटनाओं का सिलसिला शुरू हो जाता है। कभी रहस्यमयी किरदार नजर आते हैं, तो कभी ऐसे ट्विस्ट सामने आते हैं, जिन्हें देखकर लोग भी सोच में पड़ जाते हैं। खास बात ये है कि यामी का अंदाज भी इस बार बिल्कुल अलग है। उन्हें एक ऐसे अवतार में देखा जा रहा है, जो उनके पुराने किरदारों से काफी हटकर है। टीजर यही सवाल छोड़ता है कि आखिर इस परिवार में सच क्या है और कौन किससे कुछ छिपा रहा है?।

आर्टिकल 370 से धूम धाम तक बदला अंदाज

यामी गौतम की पिछली कुछ फिल्मों पर नजर डालें तो वो लगातार अलग-अलग तरह के किरदारों के साथ एक्सपेरिमेंट करती नजर आई हैं। आर्टिकल 370 में उन्होंने इंटेलिजेंस ऑफिसर जोनी हक्सर का गंभीर और दमदार किरदार निभाया, वहीं धूम धाम में उनका किरदार ज्यादा मस्तीभरा और बिंदास था। इसके अलावा साल 2025 में रिलीज हुई हक में भी यामी नजर आईं। यही वजह है कि नयी नवेली में उनका नया अवतार देखने के लिए फैंस की एक्साइटमेंट और बढ़ गई है।

आगे भी कई दिलचस्प प्रोजेक्ट्स

नयी नवेली के बाद भी यामी के पास कई दिलचस्प प्रोजेक्ट्स हैं। उनकी फिल्मोग्राफी के मुताबिक वो तामसुर, कहानी 3 और चोर निकल के भागा 2 जैसे प्रोजेक्ट्स से भी जुड़ी हैं। इसके अलावा एक अनटाइटल्ड प्रोजेक्ट पोस्ट-प्रोडक्शन में बताया गया है। यानी आने वाले समय में यामी एक ही तरह के किरदार में बंधने के बजाय अलग-अलग जॉनर आजमाती नजर आ सकती हैं। ऐसे में अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि नयी नवेली में सच में भाभी डायन है या कहानी में छिपा है कोई और बड़ा राज?

कमल और मीना में सैफ अली संग नजर आयेंगी तृप्ति डिमरी

हिंदी सिनेमा की सबसे चर्चित और ऐतिहासिक रचनात्मक जोड़ियों में से एक पर जल्द ही एक पीरियड ड्रामा बनने जा रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, बॉलीवुड एक्टर सैफ अली खान और तृप्ति डिमरी फिल्ममेकर सिद्धार्थ पी। मल्होत्रा की आने वाली बायोपिक कमल और मीना में मुख्य भूमिका निभाने के लिए बातचीत के अंतिम चरण में हैं। यह फिल्म मशहूर एक्ट्रेस मीना कुमारी और जाने-माने निर्देशक कमल अमरोही की जिंदगी पर आधारित होगी। अगर स्टार्स की कास्टिंग फाइनल हो जाती है, तो सैफ अली खान फिल्म में कमल अमरोही के किरदार में नजर आएंगे, जबकि तृप्ति डिमरी मीना कुमारी की भूमिका निभाती दिखेंगी। हालांकि, अभी तक मेकर्स या एक्टर्स की तरफ से आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।

वैरायटी इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, इस प्रोजेक्ट को नेटफ्लिक्स ओरिजिनल के रूप में डेवलप किया जा रहा है और फिलहाल यह प्री-प्रोडक्शन स्टेज में है। प्रोजेक्ट के लिए अभिनेताओं के शूटिंग शेड्यूल और कॉन्ट्रैक्ट पर बातचीत चल रही है। फिल्म का शीर्षक कमल और मीना लगभग एक साल पहले सोशल मीडिया पर घोषित किया गया था। इस बायोपिक का निर्माण बिलाल अमरोही कर रहे हैं, जिससे इस प्रोजेक्ट का अमरोही परिवार से सीधा कनेक्शन जुड़ता है। सिद्धार्थ पी। मल्होत्रा के निर्देशन और नेटफ्लिक्स के बैकअप के साथ यह प्रोजेक्ट तेजी से आगे बढ़ रहा है।

यह अपकमिंग प्रोजेक्ट मीना कुमारी और कमल अमरोही के निजी और पेशेवर जीवन के विभिन्न पहलुओं को गहराई से टटोलेगा। इसमें उनके खूबसूरत रिश्ते के साथ-साथ उनके प्यार और व्यक्तिगत संघर्षों को भी दिखाया जाएगा। कमल अमरोही ही वह महान फिल्ममेकर और पटकथा लेखक थे, जिन्होंने मीना कुमारी की सबसे प्रतिष्ठित फिल्मों में से एक पाकीजा का निर्माण किया था। शादी के बंधन में बंधने के बाद दोनों की व्यक्तिगत और व्यावसायिक जिंदगी एक-दूसरे से गहराई से जुड़ गई थी। यह बायोपिक मीना कुमारी के जीवन के एक महत्वपूर्ण चरण पर ध्यान केंद्रित करेगी और सिनेमाई सफर के दौरान अमरोही के साथ उनके संबंधों की पड़ताल करेगी।

मीना कुमारी का जीवन और उनका संघर्ष सालों से कई फिल्म निर्माताओं को आकर्षित करता रहा है और उनकी कहानी को बड़े पर्दे पर लाने के कई प्रयास किए गए हैं। इससे पहले प्रीतिश नंदी कम्युनिकेशन के बैनर तले बनने वाली बायोपिक से विद्या बालन का नाम जुड़ा था, लेकिन बाद में वे इससे अलग हो गईं।

सलीम खान को मिला सम्मान

स्टेज पर पहुंचीं हेलेन

मुंबई में सिनेमा के दिग्गजों को राज कपूर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बॉलीवुड के मशहूर पटकथा लेखक सलीम खान को भी इस अवॉर्ड से नवाजा गया। उनकी जगह यह सम्मान उनकी पत्नी अभिनेत्री हेलेन लेने पहुंची। हेलेन ने यहां सलीम के स्वास्थ्य पर भी जानकारी दी।

सलीम खान का हिंदी सिनेमा में बड़ा योगदान रहा है। उनके इस समर्पण और लगन को सम्मानित करने के लिए उन्हे राज कपूर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से नवाजा गया। सम्मान ग्रहण करने के बाद हेलेन ने सलीम की तरफ से सबको शुक्रिया कहा और भावनाएं व्यक्त कीं। हेलेन ने कहा, मैं सलीम साहब को दिए गए इस सम्मान के लिए आभारी हूं। उन्होंने आप सभी लोगों को धन्यवाद कहा है। उनकी सभी फिल्में मेरी फेवरेट हैं।

समारोह में हेलेन ने सलीम साहब के स्वास्थ्य की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा, 'उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। वे बहुत मजबूत इंसान हैं और आप सभी को, पूरे महाराष्ट्र और भारत को अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं।' बता दें कि महाराष्ट्र राज्य फिल्म पुरस्कार समारोह हाल ही में मुंबई के रवींद्र नाट्य मंदिर में आयोजित हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस भी उपस्थित थे। इस समारोह में रानी मुखर्जी को उनके सिनेमा में वर्षों के योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

किसे मिला कौन सा पुरस्कार?

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने लाइफटाइम अचीवमेंट और स्पेशल कंट्रीब्यूशन अवॉर्ड्स प्रदान किए। चूंकी यह वी। शांताराम की 125वीं जयंती है इसलिए समारोह में वी। शांताराम लाइफटाइम अचीवमेंट और स्पेशल कंट्रीब्यूशन अवॉर्ड्स तथा राज कपूर लाइफटाइम अचीवमेंट दिए गए। पंडित हृदयनाथ मंगेशकर को छत्रपति वी। शांताराम लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। अभिनेता-निर्देशक प्रसाद ओक को छत्रपति वी। शांताराम स्पेशल कंट्रीब्यूशन अवॉर्ड मिला। अनुभवी पटकथा लेखक सलीम खान को राज कपूर लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड दिया गया। वहीं अभिनेत्री रानी मुखर्जी को राज कपूर स्पेशल कंट्रीब्यूशन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

बिहार में एकबार फिर सत्ता पक्ष व विपक्ष में रार!

बेचारा टिप्पणी पर प्रशांत किशोर का पलटवार

» सीएम सम्राट चौधरी पर तीखा हमला अनपढ़ अपराधी के हाथों में नहीं सौंपी जा सकती बिहार की कमान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में एकबार फिर सत्ता पक्ष व विपक्ष में रार मच गई है। सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर और बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के बीच छिड़ी जुबानी जंग ने राज्य के राजनीतिक तापमान को बढ़ा दिया है। उत्तरी बिहार के सहरसा जिले में पत्रकारों से बातचीत करते हुए प्रशांत किशोर ने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पर तीखा राजनीतिक हमला बोलते हुए उन्हें अनपढ़ अपराधी करार दिया और कहा कि ऐसे व्यक्ति के हाथों में राज्य का शासन नहीं सौंपा जा सकता।

यह विवाद तब गहराया जब एक साक्षात्कार के दौरान मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बांकीपुर के विधायक प्रशांत किशोर के लिए बेचारा शब्द का इस्तेमाल किया था। इस टिप्पणी पर तंज कसते हुए प्रशांत किशोर ने कहा, सम्राट चौधरी का मुझे बेचारा कहना बिल्कुल सही है, क्योंकि मेरे पास उनके जैसे अनपढ़ अपराधी से बिहार को मुक्त कराने के लिए संघर्ष करने के अलावा और कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा है। जन सुराज के बैनर तले बिहार के जिलों का दौरा कर रहे प्रशांत किशोर लगातार सत्तारूढ़ एनडीए और पारंपरिक राजनीतिक दलों पर हमलावर रहे हैं। सहरसा में दिया गया यह बयान केवल एक तीखी टिप्पणी नहीं है, बल्कि यह संकेत देता है कि आने वाले समय में जन सुराज पार्टी राज्य के मुख्य राजनीतिक चेहरों की कार्यशैली और योग्यता को सीधे जनता की अदालत में चुनौती देने की आक्रामक रणनीति पर काम कर रही है।

नीतीश के करीबी का बड़ा दावा-बिहार से जाने वाली है एनडीए सरकार?

बिहार में एनडीए की सरकार है और सम्राट चौधरी मुख्यमंत्री हैं। हाल ही बांकीपुर सीट पर उपचुनाव हुआ तो बीजेपी को बड़ा झटका लगा और प्रशांत किशोर बड़ी आसानी से जीत गए। इस बीच नीतीश कुमार के करीबी नेताओं में से एक छोटू सिंह ने दावा किया है कि बिहार से एनडीए की सत्ता जा सकती है। उन्होंने दावे के पीछे की वजह भी बताई है। छोटू सिंह एक चैनल से बातचीत कर रहे थे। इस दौरान बिहार एमएलसी चुनाव पर भी वे खूब बोले। दो टूक में कहा कि पटना स्नातक सीट से वे नीरज कुमार (जेडीयू एमएलसी) को किसी भी हाल में जीतने नहीं देंगे। नीरज कुमार को लेकर उन्होंने कहा कि सवर्ण के नाम पर धब्बा हैं। गुंडे की भाषा बोलते हैं।

निजी हमलों से परे व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई

चुनावी रणनीतिकार से राजनेता बने प्रशांत किशोर ने स्पष्ट किया कि उनकी लड़ाई किसी व्यक्तिगत रंजिश का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह बिहार में बेहतर शासन और व्यवस्था परिवर्तन का संकल्प है। उन्होंने तर्क दिया कि जब सत्ता की बागडोर ऐसे प्रशासनिक अनुभवहीन और विवादित छवि वाले नेताओं के हाथों में होगी, तो राज्य के युवाओं का पलायन, बदहाल शिक्षा प्रणाली और आर्थिक पिछड़ापन खत्म नहीं हो सकता। जन सुराज के बैनर तले बिहार के जिलों का दौरा कर रहे प्रशांत किशोर लगातार सत्तारूढ़ एनडीए और पारंपरिक राजनीतिक दलों पर हमलावर रहे हैं। सहरसा में दिया गया यह बयान केवल एक तीखी टिप्पणी नहीं है, बल्कि यह संकेत देता है कि आने वाले समय में जन सुराज पार्टी राज्य के मुख्य राजनीतिक चेहरों की कार्यशैली और योग्यता को सीधे जनता की अदालत में चुनौती देने की आक्रामक रणनीति पर काम कर रही है।

मान-सम्मान के आगे पद नहीं : छोटू सिंह

एक सवाल के जवाब में छोटू सिंह ने कहा कि हमको क्यों निकाला गया? क्यों हटाया गया? पद रहे या न रहे, मान-सम्मान के आगे मेरे लिए कोई पद नहीं है जिस तरह से आज प्रशांत किशोर ने पद लेकर दिखा दिया, ये वही हैं जिनको कभी एक सीट नहीं आई थी, लेकिन जनता ने ताकत दिया तो आज सब लोग हाय-हाय हो गए। बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह के पद से हटने की चर्चा तेज है। कहा जा रहा है कि यह पद जेडीयू को मिलेगा। इस पर छोटू सिंह ने कहा, अगर अवधेश बाबू को आप हटा देते हैं तो बिहार से एनडीए की सत्ता चली जाएगी। जेडीयू के पूर्व नेता ने कहा, नीरज कुमार कहता है कि जेडीयू ऑफिस में घुसने नहीं देंगे, तो एमएलसी हो कि गेटकीपर हो तुम? आज नीतीश कुमार ठीक होते तो इस तरह नीरज कुमार नहीं बोलते आपको हम लोग चुनाव नहीं जीतने देंगे। जिस दिन सात नंबर आवास की पोल खोल दी उस दिन पता चलेगा। हमको तो लोगों ने पार्टी से निष्कासित कर दिया समय आने पर बताएंगे, ये तो फिल्म का पहला एपिसोड है।

सोनम वांगचुक की केंद्र को चेतावनी

» लद्दाख मामले पर 19 सितंबर से फिर शुरू होगा बड़ा आंदोलन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सोशल एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक ने धमकी दी कि अगर केंद्र सरकार एक हफ्ते के अंदर लद्दाख से जुड़े मुद्दों पर उन्हें कोई भरोसा नहीं देती है, तो वे 19 से 24 सितंबर तक एक नया आंदोलन शुरू करेंगे। यह बात तब सामने आई जब लद्दाख के समूहों ने गृह मंत्रालय की एक सब-कमेटी के साथ बैठक के बाद निराशा ज़ाहिर की। दिल्ली में एक मीडिया ब्रीफिंग में उन्होंने कहा हम बेबस हैं।

हमें लग रहा था कि विरोध प्रदर्शन या पदयात्रा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, लेकिन... हमें कोई भरोसा नहीं मिला है। अगर हमें भरोसा नहीं मिला, तो हम बड़ा आंदोलन शुरू करने के लिए मजबूर होंगे। अब पदयात्रा 19 से 24 सितंबर तक होगी। हालांकि, हमें अभी भी उम्मीद है कि एक हफ्ते के अंदर हमें भरोसा मिल जाएगा। लेह एपेक्स बॉडी और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस के सदस्यों ने बुधवार को गृह मंत्रालय अधिकारियों के साथ बैठक की।

इसमें केंद्र शासित प्रदेश के लिए राज्य का दर्जा और संवैधानिक अधिकारों की सुरक्षा की मांगों पर चर्चा हुई। हालांकि, इन समूहों को निराशा हाथ लगी, जबकि केंद्रीय गृह मंत्रालय का कहना था कि बैठक सकारात्मक रही। इन समूहों के मुताबिक, सरकार की ओर से लद्दाख के लिए प्रस्तावित चुनी हुई संस्था का कोई ड्राफ्ट पेश नहीं किया गया।

कोंच तहसील में जुटे सैकड़ों पत्रकार

» सुरक्षा और निष्पक्ष जांच की उठाई मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोंच (जालौन)। जालौन के कोंच में डिस्ट्रिक्ट प्रेस क्लब के पदाधिकारियों और पत्रकार सदस्यों ने वरोध प्रदर्शन किया। यह विरोध नई दिल्ली में 4PM न्यूज़ नेटवर्क की महिला पत्रकारों शाहीन खान और नफीसा खान के साथ पुलिस द्वारा मारपीट और अभद्रता के खिलाफ था। पत्रकारों ने तहसील पहुंचकर एसडीएम को राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन सौंपा।

तहसील अध्यक्ष के नेतृत्व में पत्रकारों ने कहा कि पत्रकार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। वे जनहित से जुड़े मुद्दों को समाज और प्रशासन के सामने रखते हैं। ऐसे में समाचार संकलन के दौरान पत्रकारों के साथ मारपीट, अभद्रता या उनके काम में बाधा डालना चिंताजनक है। ज्ञापन में पत्रकारों ने मांग की कि नई दिल्ली की घटना की निष्पक्ष और उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। अगर जांच में पुलिसकर्मी दोषी पाए जाते हैं, तो उनके खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई की जाए। पत्रकारों ने यह भी कहा कि समाचार संकलन के दौरान पत्रकारों की सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित होना चाहिए।

जल्द पार्थ को भाजपा की राजनीति समझ में आएगी : रोहित पवार

» मुंधवा जमीन सौदे से जुड़े मामले में राकांपा सांसद को आरोपी न बनाए जाने पर दी प्रतिक्रिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। बंबई उच्च न्यायालय के मुंधवा जमीन सौदे से जुड़े मामले में राकांपा सांसद पार्थ पवार को आरोपी न बनाए जाने का जिक्र करने वाली जमानत अर्जी पर महाराष्ट्र पुलिस से जवाब तलब करने के कुछ दिनों बाद राकांपा (शप) नेता रोहित पवार ने कहा कि पार्थ अब करीब से जान पाएंगे कि भाजपा की राजनीति क्या है। रोहित रिश्ते में पार्थ के भाई लगते हैं।

अजित पवार के नेतृत्व में पार्टी में बगावत के बाद हुए विभाजन के दौरान रोहित शरद पवार नीत खेमे में बने रहने का फैसला किया था। रोहित ने पार्थ से मामले को लेकर एक संवददाता सम्मेलन आयोजित करने और तथ्य स्पष्ट करने का सुझाव दिया। बंबई उच्च न्यायालय ने मुंधवा जमीन सौदे के मामले में सोमवार को दो आरोपियों की अग्रिम जमानत अर्जी पर सुनवाई करते हुए राज्य पुलिस से जवाब मांगा था। याचिका में कहा गया है कि राज्यसभा सदस्य एवं उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार के बेटे पार्थ को आरोपी नहीं बनाया गया है, जबकि उनके व्यापार साझेदार दिग्विजय पाटिल को मामले में नामजद किया गया है। नागपुर में संवाददाताओं ने जब रोहित से इस घटनाक्रम के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वह उच्च न्यायालय में लंबित मामले पर कोई टिप्पणी नहीं कर सकते, लेकिन पार्थ पवार को प्रेस वार्ता करनी चाहिए। उन्होंने कहा, पार्थ को लोगों को बताना चाहिए कि असलियत क्या है और हालात क्या हैं... पहले, जब (पार्थ के दिवंगत पिता) अजीत पवार जीवित थे, तब वह मीडिया के सामने जाकर सारी बातें साफ-साफ बताते थे। इसलिए मुझे लगता है कि अब पार्थ को भी प्रेस वार्ता करनी होगी। रोहित ने कहा कि उच्च न्यायालय में लंबित मामले में राज्य पुलिस को जवाब दाखिल करना है। उन्होंने कहा, पुलिस अधिकारी किस विभाग के होते हैं? वे गृह विभाग के होते हैं।

कांग्रेस वाले क्या चाहते हैं कश्मीरी और जेल में भरे जाएं : उमर अब्दुल्ला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। वंदे मातरम् के पूर्ण संस्करण को लेकर कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों के बीच छिड़ी बहस के बीच जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने स्पष्ट रुख अपनाया है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय गीत से जुड़े नियम केवल जम्मू-कश्मीर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पूरे देश में लागू हैं और उनका उल्लंघन करने पर कार्रवाई हो सकती है।

उमर का यह बयान कांग्रेस की आपत्तियों और वंदे मातरम् को लेकर चल रही बहस के बीच सामने आया है। हालांकि अब्दुल्ला ने स्पष्ट किया है कि उनकी पार्टी ने कभी वंदे मातरम् को नहीं अपनाया और भविष्य में भी नहीं अपनाएगी, लेकिन सरकारी कार्यक्रमों में लागू कानून और प्रोटोकॉल का पालन करना अनिवार्य है।

ईस्ट जोन की खिताबी जीत तय

» दलीप ट्राफी : ईशान के तूफान से साउथ जोन पर 584 रन की बढ़त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन ने साउथ जोन पर 584 रन की विशाल बढ़त हासिल कर खिताबी जीत लगभग पक्की कर ली है, जिसमें कप्तान ईशान किशन के 80 रन और शिखर मोहन के अर्धशतक का महत्वपूर्ण योगदान रहा। साउथ जोन की पहली पारी 336 रन पर सिमटने के बाद तिलक वर्मा के 99 रन के बावजूद टीम दबाव में है और अंतिम दिन मुकाबला बचाने की चुनौती का सामना कर रही है।

ईशान किशन के मैच में कुल 350 रन और रणनीतिक बढ़त के साथ ईस्ट जोन की डोमिनेंट स्थिति घरेलू क्रिकेट में उनकी उत्कृष्ट बल्लेबाजी रणनीति को दर्शाती है। दलीप ट्रॉफी में ईस्ट जोन ने खिताब पर अपनी पकड़ लगभग मजबूत कर ली है। चौथे दिन का खेल खत्म होने तक ईस्ट जोन ने साउथ जोन के सामने 584 रन की विशाल बढ़त हासिल कर ली। कप्तान ईशान किशन और शिखर मोहन के अर्धशतकों ने टीम की स्थिति को और मजबूत किया। किशन 80 रन बनाकर आउट हुए, जबकि मोहन ने 52 रन की पारी खेली। ईशान किशन के लिए यह मुकाबला व्यक्तिगत तौर पर भी खास रहा है। उन्होंने पूरे मैच में कुल 350 रन बनाए हैं। हालांकि, दूसरी पारी में वह शतक से केवल 20 रन दूर रह गए। इससे पहले दिन की शुरुआत में तिलक वर्मा भी अपने शतक से महज एक रन से चूक गए और 99 रन बनाकर पवेलियन लौटे। चौथे दिन साउथ जोन के गेंदबाजों के सामने ईस्ट जोन की पहली पारी के बचे हुए चार विकेट जल्दी गिराने की चुनौती थी। ईस्ट जोन ने सुबह 94 रन और जोड़े। तिलक वर्मा ने अपनी शानदार बल्लेबाजी जारी रखी और नए गेंद से मोहम्मद शमी के पहले ही ओवर में लगातार दो चौके जड़ दिए। दूसरी ओर सीवी मिलिंद ने भी मुकेश कुमार की गेंद पर बेहतरीन कवर ड्राइव लगाकर अपने इरादे साफ कर दिए।

नई गेंद से बल्लेबाजों के खिलाफ गेंदबाजों को खास सफलता नहीं मिली

नई गेंद से बल्लेबाजों के खिलाफ गेंदबाजों को खास सफलता नहीं मिली तो सिपन गेंदबाजों को मोर्चे पर लगाया गया। आखिरकार यह रणनीति काम आई और मिलिंद की पारी का अंत हुआ। इसके बाद त्रिपुराना विजय रन आउट हो गए। तिलक ने स्ट्राइक अपने पास रखने की कोशिश की, लेकिन इस फैसले का फायदा नहीं मिला। इसके बाद मोहम्मद सिराज को मुकेश कुमार के सामने बल्लेबाजी करनी पड़ी और मुकेश ने उन्हें पगबाधा आउट कर दिया। तिलक के पास शतक पूरा करने का शानदार मौका था, लेकिन अगले ही ओवर में वह गेंद को ठीक से टाइम नहीं कर सके और गेंद सीधे गेंदबाज के हाथों में चली गई। इस तरह वह 99 रन पर आउट होकर शतक से चूक गए। ईस्ट जोन ने पहली पारी में 372 रन की बढ़त हासिल करने के बावजूद फॉलोऑन नहीं देने का फैसला किया। इससे दर्शकों को एक बार फिर वैभव सूर्यवंशी की बल्लेबाजी देखने का मौका मिला।

पत्रकारिता की एबीसीडी किसी अच्छे स्कूल से सीख लीजिए!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पत्रकारिता की एबीसीडी किसी अच्छे स्कूल से सीख लीजिए। लगता है आपके संस्थान इंडिया टुडे /आजतक ने आपको यह बुनियादी बात नहीं सिखाई कि पत्रकारिता सिर्फ व्यूज़, लाइक्स और वायरल वीडियो का खेल नहीं है। खबर में जरूरी तथ्य जानबूझकर छोड़ देना भी उतना ही गंभीर सवाल खड़ा करता है जितना गलत तथ्य देना।

4 पीएम की पत्रकार शाहीन के साथ हुई घटना पर आपने एक के बाद एक कई वीडियो बनाए। शाहीन के इंटरव्यू किए। करीब 44 मिनट का डेडिकेटेड वीडियो तक बनाया। शाहीन का नाम लिया, उसकी कहानी बताई, घटना बताई, वीडियो से व्यूज़ लिए। लेकिन एक छोटी-सी जानकारी आपके गले से नहीं उतरी कि शाहीन आखिर पत्रकार किस संस्थान की है? वह 4पीएम की पत्रकार है। यह कोई मामूली या गैर-जरूरी तथ्य नहीं था। जिस पत्रकार के साथ हुई घटना आपकी पूरी स्टोरी का केंद्र थी, उसके संस्थान का नाम बताना पत्रकारिता की सामान्य और स्वाभाविक प्रक्रिया थी। दुनिया भर और देश के तमाम मीडिया संस्थानों को 4PM का नाम लिखने में कोई परेशानी नहीं हुई, लेकिन लल्लनटॉप को आखिर क्या परेशानी थी?

सवाल इसलिए और गंभीर है

सवाल इसलिए और गंभीर है क्योंकि यह चूक किसी एक छोटे वीडियो में नहीं हुई। आपके शाहीन पर किए गए कई वीडियो में 4PM का उल्लेख नहीं किया गया। फिर जब सोशल मीडिया पर लोगों ने सवाल उठाने शुरू किए, India Today Group और उसके वरिष्ठ लोगों को टैग किया जाने लगा और यह मुद्दा जोर पकड़ने लगा कि आखिर 4PM का नाम क्यों छिपाया जा रहा है, तब लल्लनटॉप के संपादक कुलदीप मिश्रा के एक बुलेटिन में कुछ सेकेंड के लिए 4PM का नाम आया। अब उसी चंद सेकेंड के उल्लेख को ढाल बनाकर आप ट्वीट कर रहे हैं कि देखिए, हमने तो 4PM का नाम लिया था।रजत जी, सवाल यह नहीं है कि पूरे संस्थान के किसी एक बुलेटिन के किसी कोने में कभी 4PM शब्द बोला गया या नहीं। सवाल आपसे है। आपके शाहीन पर बनाए गए वीडियो में 4PM का नाम क्यों नहीं था? आपके डेडिकेटेड वीडियो में क्यों नहीं था?

शाहीन की कहानी आपको चाहिए, शाहीन का इंटरव्यू आपको चाहिए, शाहीन के नाम पर व्यूज़ आपको चाहिए

शाहीन के वीडियो से engagement आपको चाहिए। लेकिन शाहीन जिस 4PM की पत्रकार है, उसका नाम लेने में परेशानी क्यों? यही सवाल है। पत्रकारिता में प्रतिस्पर्धा होती है, दुश्मनी नहीं। अगर कोई पत्रकार दूसरे संस्थान में काम करता है तो उसका संस्थान बताने से आपका कद छोटा नहीं हो जाता। उल्टा, तथ्य छिपाने से आपकी अपनी विश्वसनीयता पर सवाल खड़े होते हैं। और जहां तक गोदी मीडिया शब्द से परेशानी की बात है, तो किसी मीडिया संस्थान की विश्वसनीयता उसके बड़े स्टूडियो, कैमरों, करोड़ों subscribers या views से तय नहीं होती। वह इस बात से तय होती है कि जब तथ्य उसके व्यावसायिक या संपादकीय हितों के अनुकूल न हों, तब भी वह उन्हें दर्शकों के सामने पूरी ईमानदारी से रखता है या नहीं। हम आपसे सिर्फ इतना चाहते हैं कि शाहीन पर बनाए गए अपने वीडियो दोबारा देखिए और सार्वजनिक रूप से बताइए कि उनमें 4PM का नाम क्यों नहीं बताया गया। और कृपया जवाब में किसी दूसरे बुलेटिन के कुछ सेकेंड मत दिखाइएगा। अपने वीडियो का जवाब अपने वीडियो से दीजिए। बाकी फैसला दर्शक करेंगे कि यह पत्रकारिता थी, संपादकीय चूक थी या जानबूझकर 4PM की पहचान को कहानी से बाहर रखने की कोशिश। और हां रजत जी, अगली बार किसी पत्रकार की कहानी पर 40-45 मिनट का वीडियो बनाने से पहले उसका नाम और वह किस संस्थान के लिए काम करती है, ये दो तथ्य जरूर जांच लीजिएगा।व्यूज़ पत्रकारिता का परिणाम हो सकते हैं। व्यूज़ पत्रकारिता का विकल्प नहीं हो सकते।

अगर आप जवाब देना चाहते हैं तो सीधा जवाब दीजिए

और एक बात और। आप अपनी पोस्ट में नफीसा का नाम तक गलत लिखकर नफीसा कर देते हैं। जिस पत्रकार की कहानी पर आप रिपोर्टिंग कर रहे हैं, कम से कम उसका नाम तो ठीक से लिखिए। पत्रकारिता की शुरुआत तथ्यों और नामों की शुद्धता से ही होती है। इस पूरे घटनाक्रम से एक गंभीर सवाल पैदा होता है। क्या 4PM का नाम न लेना महज बार-बार हुई संपादकीय चूक थी, कोई संपादकीय नीति थी, या इसके पीछे कोई और वजह थी? हम बिना प्रमाण इसे साजिश घोषित नहीं कर रहे, लेकिन लगातार एक ही जरूरी तथ्य का गायब रहना सवाल पूछने का पूरा आधार जरूर देता है। अगर कोई और कारण है तो सार्वजनिक रूप से बताइए।

85 करोड़ के बैंक फ्रॉड केस में ईडी ने किया बड़ा एक्शन

» बिहार से लेकर दिल्ली-गुरुग्राम तक 9 ठिकानों पर छापेमारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बैंक धोखाधड़ी और कथित वित्तीय अनियमितताओं के मामलों में प्रवर्तन निदेशालय ने शुक्रवार को कई राज्यों में एक साथ बड़ी कार्रवाई शुरू की। पटना स्थित ईडी की टीम गया की रामनंदी होटल्स एंड रिसॉर्ट्स लिमिटेड से जुड़े मामले में बिहार, दिल्ली और गुरुग्राम में नौ ठिकानों पर सर्च ऑपरेशन चला रही है। जांच में बैंकों से लिए गए करोड़ों रुपये के लोन को कथित रूप से दूसरी जगह डायवर्ट करने और फर्जी दस्तावेजों के इस्तेमाल के आरोप सामने आए हैं।

वहीं कोलकाता जोनल कार्यालय की टीम एसअसरईआई समूह से जुड़े कथित लोन घोटाले मेंएआरएसएस व एएमआर समूह के परिसरों की भी तलाशी ले रही है। प्रवर्तन निदेशालय की पटना इकाई ने धन शोधन निवारण अधिनियम की धारा 17 के तहत बिहार के गया जिले से जुड़े बैंक फ्रॉड मामले में छापेमारी शुरू की है। कार्रवाई रामनंदी होटल्स एंड रिसॉर्ट्स लिमिटेड और उससे जुड़े लोगों के परिसरों पर की जा रही है। ईडी के मुताबिक, कंपनी का नियंत्रण अखौरी गोपाल और उनके पुत्र निशांत तथा नितेश के पास था। जांच में सामने आया है कि कंपनी को विभिन्न बैंकों के कंसोर्टियम की ओर से करीब 85 करोड़ रुपये का ऋण दिया गया था। जांच एजेंसी का आरोप है कि लोन की राशि में से लगभग 58 करोड़ रुपये को निर्धारित उद्देश्य के बजाय अन्य जगहों पर भेज दिया गया। ईडी के अनुसार यह धन कथित तौर पर फर्जी और जाली प्रोजेक्ट कंप्लीशन रिपोर्ट के आधार पर हासिल किया गया था। बताया जा रहा है कि परियोजना पूर्ण होने से संबंधित रिपोर्ट कंपनी के चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा प्रस्तुत की गई थी, जिसके आधार पर ऋण वितरण की प्रक्रिया आगे बढ़ी।

जांच में यह भी सामने आया है कि लोन के बदले कई संपत्तियां गिरवी रखी गई थीं। इनमें से पांच संपत्तियां टाटा मोटर्स लिमिटेड के पक्ष में मॉर्टगेज बताई गई थीं। ईडी का आरोप है कि गिरवी रखी गई इन संपत्तियों को बाद में बेच दिया गया। एजेंसी को संदेह है कि बिक्री के दौरान वास्तविक बाजार मूल्य से काफी कम कीमत दिखाई गई और दस्तावेजों में रकम को नकद प्राप्ति के रूप में दर्शाया गया। कुछ खरीदार भी जांच एजेंसी के रडार पर हैं। ईडी का मानना है कि इनमें से कुछ लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है कि वे करोड़ों रुपये की संपत्ति खरीद सकें। ऐसे में उन्हें बेनामी या प्रॉक्सी खरीदार होने की आशंका जताई जा रही है।

ट्रक से भिड़ी बोलेरो तीन बच्चों समेत आठ लोगों की मौत

» महाराष्ट्र के भंडारा में हुई दर्दनाक घटना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र के भंडारा जिले में आज शुक्रवार तड़के भयानक सड़क हादसा हुआ। ट्रक और स्पोर्ट यूटिलिटी व्हीकल बोलेरो के बीच जोरदार टक्कर हुई। इस हादसे में तीन बच्चों समेत आठ लोगों की मौत हो गई।

पुलिस ने बताया कि यह हादसा आज शुक्रवार, 11 सितंबर की सुबह 4 बजे लखनी तालुका में मानेगांव और पिंपलगांव के बीच हुआ। मौके पर मौजूद एक पुलिस अधिकारी ने कहा, एक बोलेरो गाड़ी आइशर ट्रक से टकरा गई। हादसे में बोलेरो में सवार आठ लोगों- पांच वयस्क और तीन बच्चों की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि बोलेरो में सवार लोग छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से नेशनल हाईवे 53 के जरिए नागपुर आ रहे थे। सुबह 4 बजे करीब लखनी तालुका में मानेगांव और पिंपलगांव के बीच गाड़ी की टक्कर ट्रक से हो गई। पुलिस ने बोलेरो में सवार आठ लोगों की मौत की पुष्टि की है। इस मामले में आगे की जांच जारी है।

विस पुरकाजी में सत्ता के खिलाफ फूटा गुस्सा

बेबाक बोल जनता खोल रही पोल

चरथावल विस की ग्राउंड रिपोर्ट

क्षितिजकांत

» मुस्लिम, मजदूर और युवा एक स्वर में बोले-27 में लेंगे हिसाब
» हिंदू-मुस्लिम पर टिकी सरकार, मजदूर ठगा गया
» युवा का पहला वोट पेपर लीक के खिलाफ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पुरकाजी, मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर की पुरकाजी विधानसभा में सरकार के खिलाफ जबरदस्त नाराजगी दिख रही है। मुस्लिम समाज, मजदूर वर्ग और पहली बार वोट डालने वाले युवाओं ने एक साथ मोर्चा खोल दिया है। लोगों का कहना है - वादे जुमले निकले, अब वोट की चोट से जवाब देंगे।

मेरा पहला वोट पेपर लीक के खिलाफ : हाशिम

हाईस्कूल छात्र हाशिम ने कहा कि उसका पहला वोट बेरोजगारी और पेपर लीक के खिलाफ होगा। हाशिम ने कहा, मेरी उम्र 18 साल है, पहली बार वोट डालूंगा। जंतर-मंतर पर नीट पेपर लीक के खिलाफ आंदोलन में लाठीचार्ज हुआ, किसी की आंख फूट गई, कई घायल हुए। साल भर तैयारी करो और पेपर लीक हो जाए, यह छात्रों की मनोदशा पर सबसे बड़ा प्रहार है। हमें सिर्फ पारदर्शी परीक्षा और नौकरी चाहिए। सरकार 2 करोड़ रोजगार का जुमला देकर आई थी, जो आज तक पूरा नहीं हुआ। किसी नौजवान को यह सरकार समझ नहीं आई। मेरा पहला वोट पेपर लीक के खिलाफ होगा।

भाजपा राज में किसान बर्बाद और आम मुसलमान परेशान है : साजिद अली

साजिद अली ने कहा,गन्ना किसान पारंपरिक खेती छोड़कर टिंबर-पॉपुलर लगाने को मजबूर है। गन्ने का सही दाम नहीं मिल रहा। इथेनॉल से उद्योगपति कमा रहे हैं, चीनी 30-35 रुपये से 70 रुपये किलो हो गई, किसान को कुछ नहीं मिला। स्मृति ईरानी का 13 रुपये चीनी वाला वादा जुमला निकला। उन्होंने कहा, सपा सरकार में 11-12 हजार में निजी नलकूप कनेक्शन लगता था, अब 60-70 हजार लगते हैं, बिना रिश्वत कोई काम नहीं। खाद के कट्टे से 5 किलो खाद कम कर दी, दाम बढ़ा दिया। आय दोगुनी करने की बात झूठी निकली। आरोप लगाते हुए कहा, मुस्लिम अगर चौराहे से वाहन लेकर गुजरता है तो बार-बार चेकिंग कर परेशान किया जाता है। अधिकारी की मानसिकता मुसलमान को परेशान करने की रहती है। अंत में कहा, यह सरकार हिंदू-मुस्लिम पर चल रही है। अब मोहभंग हो चुका है, जनता जाग रही है। इस बार सपा सरकार तय है।

खेती-मजदूरी खत्म, देंगे करारा जवाब : उस्मान

मजदूर उस्मान ने कहा, हम मजदूर हैं और खुद को ठगा महसूस कर रहे हैं। सरकार वादा कुछ करती है, देती कुछ है। रोजगार खत्म, खेती-किसानी खत्म, मजदूर-गरीब बर्बाद हो गया। इस सरकार को हम करारा जवाब देंगे। सपा सरकार में 11 हजार का नलकूप कनेक्शन, भाजपा में 70 हजार, मुस्लिम देखकर रोकते हैं।

नफरत फैलाने वालों को मिली है सरकारी छूट : कयूम अंसारी

पुरकाजी निवासी कयूम अंसारी ने सरकार पर मुसलमानों को टारगेट करने का आरोप लगाया। अंसारी ने कहा, यह सरकार सिर्फ हिंदू-मुस्लिम पर टिकी है। मुसलमान को हर विभाग में परेशान किया जा रहा है, बिना रिश्वत कोई काम नहीं होता। नफरत फैलाने वाले धर्म के ठेकेदारों को सरकार का संरक्षण है, उनकी FIR तक नहीं लिखी जाती। वहीं मुस्लिम आवाज उठाए तो तुरंत FIR, ताकि हिंदू वोट एकजुट हो जाए। उन्होंने कहा, हमें बीजेपी से नहीं, उसकी नीतियों से नफरत है। आधार-पैन से सबको जोड़ दिया पर नागरिकता साबित नहीं होती। चीनी 70 रुपये किलो और गन्ना 400 रुपये क्विंटल, बाकी पैसा किसकी जेब में जा रहा है? 2027 में 36 बिरादरी और सेक्युलर हिंदू मिलकर जवाब देंगे।

पुरकाज़ी विस एक नज़र

पुरकाज़ी विधानसभा क्षेत्र भारत के उत्तर प्रदेश विधानसभा के 403 निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है । यह मुजफ्फरनगर जिले का हिस्सा है और बिजनौर लोकसभा क्षेत्र के पांच विधानसभा क्षेत्रों में से एक है । इस विधानसभा क्षेत्र में पहला चुनाव 12 में संसदीय और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन आदेश, 2008 के पारित होने के बाद हुआ था और यह निर्वाचन क्षेत्र 2008 में अस्तित्व में आया था। पुरकाजी विधानसभा क्षेत्र का विस्तार मुजफ्फरनगर, शेरपुर, छपार, बागोवाली , सिसोना, बढेड़ी, बिजोपरा, खुड्डा, खामपुर, बरला और मुजफ्फरनगर तहसील की पुरकाजी नगर पंचायत है।

विधान सभा के सदस्य

पुरकाजी विधानसभा क्षेत्र उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण और अनुसूचित जाति (एसी) के लिए आरक्षित विधानसभा सीट है। यह बिजनौर लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आती है। 2022 के विधानसभा चुनाव में आरएलडी उम्मीदवार अनिल कुमार ने जीत दर्ज की थी, उन्होंने भाजपा के प्रमोद उटवाल को हराया था। वर्तमान में अनिल कुमार उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री हैं। 17 के चुनाव में भाजपा के प्रमोद उटवाल यहाँ से विधायक चुने गए थे, जबकि 12 में इस सीट से बीएसपी के टिकट पर अनिल कुमार जीते थे।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4** पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**